(प)

(फ)

(भ)

(म)

* ओ३म् *

हितैषी-गायन रत्नाकर

प्रथम भाग

भजन नं० १ स्तुति महावीर भगवान।

धन्य तुम महावीर भगवान, लिया पुण्य अवतार—
जगत का, करने को कल्याण ॥ टेक ॥

बिलबिलाहट करते पशुकुल को, देख दयामय प्राण।
परम अहिंसामय सुधर्म्म की, डालीनीव महान ॥धन्य० ॥१॥
ऊंच नीच के भेद भावका, बढ़ा देख परिमान।
सिखलायासबकोस्वाभाविक,समतातत्वप्रधान ॥धन्य० ॥२॥
मिला समवश्रित में सुरनरपशु, सबको सबसम्मान।
समता और उदारता का यह कैसा सुभगविधान ॥धन्य० ॥३॥
अन्धी श्रद्धा का ही जगमें, देख राज बलवान।
कहा न मानो बिना युक्तिके, कोई वचनप्रधान ॥ धन्यतुम० ॥४॥
जीव समर्थ स्वयं करता है, स्वतः भाग्यनिर्माण।
यों कह स्वावलम्ब स्वाश्रयका दियासुफलप्रदज्ञान ॥ धन्य० ॥५॥
इनही आदर्शों के सन्मुख, रहनेसे सुखखान।
भारतवासी एकसमय थे भाग्यवान गुनवान ॥धन्य तुम० ॥६॥

भजन नं० २ (लावनी)

तुम सुनो दीनकेनाथ विनय इकमेरी, अब कृपा करो भगवान शरणमें तेरी ॥ टेक ॥ यह दास आपकी शरण चरण में आया, रखलीजे दीनकी लाज विश्वपतिराया। तुमनाम अनन्तअपार शास्त्र में गाया, गुणगावत गनधर आदि पार ना पाया ॥ मैं क्या वरनन करसकूं अल्पमति मेरी अब कृपा करो भगवान शरण में तेरी ॥१॥ तुम नेमीश्वर महाराज जगत के स्वामी, सच्चिदानंद सर्वज्ञ सकलजगनामी। मैं महामलिन मतिमन्द कुटिलखलकामी मोहिंकीजेनाथ अब शुद्ध जान अनुगामी देउ मोको भक्तिवरदान करो मति देरी ॥ अब कृपा० ॥ २ ॥ इस जगमें जन्मत मरत महादुखपाया, लखचौरासीमें भ्रमत भ्रमत घबराया। करुणानिधान जनजान करो अब दाया अति दुखित हुआ तब शरण आपकी आया ॥ काटो श्री पार्श यह कठिन कर्म्म की बेड़ी ॥ अब० ॥३॥ मैं किसे सुनाऊं व्यथा अपने मनकी, यहां अपना कोई नहीं आश करूंकिनकी। मैं कहांलगकरूं बखान दशा निजतन की, तुम सब जानत सर्वज्ञ पीर निजजन की ॥ अतिआरत हो फूला ये कहत प्रभु टेरी, अब कृपा करो भगवान शरण में तेरी ॥ ४ ॥

भजन नं० ३ (गुरु स्तुति)

मिलैं कब ऐसे गुरुज्ञानी ॥ टेक ॥

यश, अपयश, जीवन, मरण—जिन—सुख दुख, एकसमान ।
मित्ररिपु इकसमलखै—ज्योंमंदिर त्योंस्मशान । एकसमगिनैं
लाभ हानी मिलैं कब ऐसे० ॥ १ ॥

कांचखंड, और रत्न, बराबर—ज्यों धन त्योंही धूल,
एक है दासी और रानी मिलैं कब ऐसे० ॥ २ ॥

ऊंच नीच नहीं लखैं किसीको, सब जियजिनको एक
दोष अठारह त्याग जिन्होंने गुण मन धरे अनेक ।
है जिनकी सिद्धारथ वानी ॥ मिलै कब ऐसे० ॥ ३ ॥

जगजीवन का हित करैं, अरु तारैं भवदधि पार—
ज्ञानजोति जगमगै जिन्होंकी—तिन्हे नमूं हरबार ।
सुफल हो जासे जिंदगानी ॥ मिलैं कब ऐसे० ॥ ४ ॥

भजन नं० ४ (जिनवानी महिमा)

जगत में सांची जिनवानी ॥ टेक ॥

महावीर स्वामी ने, भाखी, जगतजीव, कल्याण,
गौतम गनधर ने, समझाकर, उदय किया रविज्ञान ।
तिमिर मिथ्यात की कर हानी ॥ जगत में सांची० ॥ १ ॥

पापी, अघतापी, कुटिलनर संतापी, अतिघोर,
मिथ्याती,घाती, अधम, खल, हिंसक, हिये कठोर।
सुगतिलई बनकर श्रद्धानी ॥ जगत में सांची० ॥ २ ॥
सिंघ, बाघ, बानर, गज, शूकर कूकर, आदिक जीव,
भील, चोर, ठग, गनिका, जाने-कीनेपाप सदीव।
किया निजहित बनकर ज्ञानी ॥ जगत० ॥ ३ ॥
पुन्य-उदय जिसजीव का, सोईपढ़ै, सुनै जिनवैन
तीनलोक की दिपै सम्पदा, खुलैं ज्ञान के नैन,
इसी से जोती उरठानी ॥ जगत में साची० ॥ ४ ॥

भजन नं० ५ (जिनवानी स्तुति)

दोहा—प्रगट वीरमुख से भई, गनधर किया प्रकाश।
हे माता जगदीश्वरी, करो हृदय ममवास ॥

छन्द पद्धडी।

किया अज्ञानतिमिर सब दूर-किया मिथ्यात सभी तुमचूर।
किया गुणज्ञान प्रकाश महान,विनय मनधार नमूं जिनवान ॥
लई जिनआन शरण तुम मात,किये तिनजीवों के दुखघात।
तुम्ही शिवमंदिरको सोपान विनय मनधार नमूंजिनवान ॥१॥
हुए वृषभादिजिनेश महेश-दिया जगजीवन को उपदेश।
किया खलपापिनका कल्यान विनय मनधार नमूं जिनवान।२।

चहे नरघाती हो विकराल, चहे मिथ्यामति हो चंडाल।
चहे विषलम्पट हो नादान, विनय मनधार नमूं जिनवान ॥३॥
चहे हो भील चहे ठग चोर–चहे गनिका अघकीने घोर।
दिया गुणज्ञान सभीकोहाल विनय० ॥ ४ ॥
चहे गजघोटक सिंह सियाल–चहे शुकवानर शूकर व्याल।
चहे अज, महिषा, गर्दभ स्वान, विनय० ॥ ५ ॥
दिया उपदेश किये भवपार–किया भूमंडल मांहिविहार।
हरो मिथ्यात प्रकाशो ज्ञान। विनय मन० ॥ ६ ॥
किया फिर गौतम ने उपकार दिया उपदेश सुना संसार।
हुये बहुजीवन के दुखहीन। विनय मन० ॥ ७ ॥
भये श्रुतकेवलि–केवलि आदि–भये मुनिराज जयोजिन।
घादि रचे तिनग्रंथसुपंथ दिखान। विनय मन० ॥ ८ ॥
तुही जिनवानि तुही जिनग्रंथ, तुही जिनआगम है शिवपंथ।
तुही तम दूर करे अज्ञान, विनय मनधार नमूं० ॥ ९ ॥
भया मम मात मेरे मन शोक, भया अज्ञान दशा विचलोक।
किया जो मात तेरा अपमान–विनय० ॥ १० ॥
तुझे संदूकन में ली रोक–अलीगढ़ के दृढ़ ताले ठोक।
नमैं नित दूरखड़े अज्ञान–विनय० ॥ ११ ॥
नहीं दिन एकभी धूप दिखात–बड़े सुखचैन से दीमक खात।
विनय बतलावत याहि अज्ञान–विन० ॥ १२ ॥
लई मन मूर्खजनों ने धार, न होय किसी विधि तोधप्रचार।

न आगमभेद कोई ले जान—विनय० ॥ १३ ॥
लखी सब महिमा पञ्चमकाल, हुये पतिहीन फंसे भ्रमजाल।
पढ़ें कोई शास्त्र न सुनियत कान विन० ॥ १४ ॥
किया तीर्थंकर आदि प्रचार–यह रक्खें मूंदके मूढ़गंवार।
भला इनकेसम कौन अज्ञान, विनय मन० ॥ १५ ॥
यदि तुझ वैन न पढ़ै नविकोय, यदि परचार न तेरा होय।
तो कैसे हो फिर जग कल्यान, विनय मन धार० ॥ १६ ॥
न तुझबिन धर्म्म बढ़ै जगमांहि, फहरावैं जैनपताका नाहि।
न हो उद्योत रवी शशि ज्ञान, विनय० ॥ १७ ॥
करो अब मात दया की दृष्टि, करो अब मात सुबुद्धिवृष्टि।
हरो सब जीवन का अज्ञान, विनय मन० ॥ १८ ॥
करो सब जीवन का उपकार, यह दो सब जन के मन में धार।
करें प्रचार बनें बुधवान विनय० ॥ १९ ॥
न होय प्रचार में तुमरे रोक, करें सब सत्यविनयदें धोक।
सभीजगबीच प्रकाशैज्ञान, विनय मन० ॥ २० ॥

घत्ता

जयजय जिनवानी, शिवसुखदानी, जगजिय प्रानीहितकरनी।
दुष्ट उधारन, पापी तारन, कुमति कुमतियों की हरनी।
भील उतारे चोर उभारे, पशुवन को तारन तरनी।
पारकिये जगजीव अनन्ते, यों महिमा जोती बरनी ॥ २१ ॥

भजन नं० ६ प्रार्थना।

भगवन समय हो ऐसा–जब प्रान तन से निकले।
तुम से ही लौ लगी हो, तुम नाम मन से निकले ॥ टेक ॥
सिद्धगिर के शिखर पर, तेरी ही, टोंक भीतर।
तुझ ध्यान हूं रहा धर, भक्ति दहन से निकले-भगवन० ॥१॥
गुरुजी दरश दिखाते, उपदेश भी सुनाते,
आराधना कराते मीठे वचन से निकले भगवन० ॥ २ ॥
भूमीपै हो संथारा, लगता हो ध्यान धारा,
त्यागूं सभी आहारा, तुझनाम धुनसे निकले भगवन० ॥३॥
सम्मुख छवी तेरी हो–उसपर निगाह मेरी हो।
संसार से वरी हो, आत्मा चमन से निकले। भगवन० ॥४॥
भक्तो के तेरे नारे, चहुंओर जां उचारे।
जैनी कहे पुकारे, प्राणी मगन से निकले, भगवन० ॥५॥

भजन नं० ७ (गजल शान्तनाथ स्तुति)

शान्त प्रभू शान्तिता का स्वाद हम को दीजिये।
नष्ट करके कर्म सारे, पार खेवा कीजिये ॥ टेक ॥

भक्ती से ती शक्ती हमारी, हो प्रगट परमात्मा।
सुधरे भारत की दशा, होवें सभी धरमात्मा ॥ शांति० ॥१॥

विद्या की हो उन्नति, और नाश हो अज्ञान का ।
प्रेम से पूरित हों सारे, ढूंडें मग कल्यान का ॥ शान्ति० ॥२॥
खोटे कर्मों से बचें, और तेरी भक्ति मन बसैं ।
शान्ति पावें प्रानी सारे, दुःख सब के ही नशैं ॥ शान्ति० ॥३॥
सारी विद्याओं को सीखें, ज्ञानावरनी नाश कर ।
धर्म क्रिया नित्य करें पूजन सामायिक ध्यान धर ॥ शांति० ॥४॥
क्रोधीमानी माया, वो लोभी हम में से कोई न हो ।
सप्त विसनों से बचें, और छोड़ देवें मोह को ॥ शान्ति० ॥ ५ ॥
कर्म आठों कारने में, मन लगा रहवे सदा ।
होवें सभी पुरुषार्थी उपकार में चित रह लगा ॥ शान्ति० ॥६॥
सत्संग अच्छे में रहें, और जैन मारग पर चलें ।
तेरे ही रहवें उपासक, सब कुकर्मों से टलें ॥ शान्ति० ॥७॥
जैनी जवाहरलाल की, विनती प्रभू स्वीकार हो ।
होवे सुधार समाज का, भारत का बेड़ा पार हो ॥ शांति० ॥८॥

भजन नं० ८ (अर्हन्त देव से प्रार्थना)

गज़ल

अर्हन्त देव तुम से, यह मेरी प्रार्थना है ।
जौहर अनादि से, जो मुझ में भरा हुआ है ॥

वो ढक रहा कर्म से, ज़ाहिर हो इल्तजा है ।
आदर्श जिंदगी हो, यह मेरी भावना हैं ॥ १ ॥
शक्ती हो मुझ में ऐसी, सब की मदद करूं मैं ।
सब की भलाई कारन, आगे कदम धरूं मैं ॥
ताक़त हो मुझ में ऐसी, जैसी थी भीम अर्जुन ।
पालूं मैं शील ऐसा, ज्यों सेठ थे सुदर्शन ॥
मुहब्बत हो ऐसी पैदा, ज्यों राम अरु लक्ष्मण ।
स्थूल भद्र जैसा, राखूं मैं पवित्र मन ॥ २ ॥
बाहू बली सा मुझ में, बल और वीरता हो ।
गज सुखमाल के मुताबिक, हो ध्यान धीरता हो ॥
अभय कुमर जैसी, बुद्धि मेरी हो निर्मल ।
गुरु हेमचन्द्र जैसा, आलमवन् में आमिल ॥
सिद्ध सैन की तरह से, विद्या करूं मैं हांसिल ।
दुनियां के प्राणियों का, दुख मेंट दूं मैं कामिल ॥३॥
हरिभद्र कालिकाचार्य्य, विश्नुकुमार स्वामी ।
रक्षा करूं धर्म्म की, ऐसे ही बन के हामी ॥
धन्ना वो शालिभद्र, जैसी हो अस्तक़ामत ।
खंदक मुनि वो अर्जुन, माली सी हो वो हिम्मत ॥
वस्तुपाल की तरह से, खर्चूं धर्म्म में दौलत ।
विजय वो विजिया जैसा, कायम रख मैं जतसत ॥४॥
रिद्धी हो भरत जैसी, वैराग्य भी हो पूरा ।

बनजाऊं केवना में, श्रीपाल जैसा सूरा ॥
खातिर वतन के ज़रदूं मैं भामाशाह जैसा ।
वहबूदी मुल्क की में हो सर्फ मेरा पैसा ॥
सेवक बनूं गुरु का, कुमारपाल जैसा ।
श्रेयांस की तरह से दूं दान मैं भी वैसा ॥ ५ ॥

गुरु आत्माराम मानिंद, चर्चा धर्म फैलादूं ।
रहकरके ब्रह्मचारी, अज्ञान को हटादूं ॥
दिक्षा के वास्ते मैं, ऐलान कृष्ण सा दूं ।
गुण ग्रहण की भी आदत, उनकीसी मैं बनालूं ॥
खातिर वतन के अपना, सर्वस्व मैं लगादूं ।
ग़फलत की नींद से मैं, हरएक को जगादूं ॥ ६ ॥

दुनियां के प्राणियों को, रस्ता धर्म्म बताकर ।
सेवा करूं धर्म्म की, तन मन सभी लगाकर ॥
साबितकदम रहूं मैं गरचे कोई सतावे ।
खुश हो तमाम सहलूं, पेशानी ख़म न खाये ।
इस तनसे सर जुदा हो, और जान तक भी जाये ।
लेकिन धर्मपै मेरे मुतलक हर्फ न आये ॥
ख़िदमत करूं मुलक की, और धर्म्म को बढ़ाऊं ।
जैनी धर्म्म का डंका चहुंओर में बजाऊं ॥ ७ ॥

भजन नं० ९ (गजल प्रार्थना)

सन्मति भवसागर के मांहि, नैय्या पार लघानेवाले ॥ टेक॥
आये पावापुर के बीच, मारे वैरी आठो नीच।
अपने धनुरध्यान को खींच, कर्म के काष्ठ उड़ानेवाले ॥
सन्म० ॥ १ ॥
लेकर चक्रसुदर्शनज्ञान, करके मिथ्यामत का भान।
जिनलाकर न्यामत परवान, मुक्ति की राह बतानेवाले ॥
सन्त० ॥ २ ॥

भजन नं० १० (लावनी देश)

तन मन सारेजी सांवरिया, तुमपर वारनाजी ॥ टेक ॥
बालापन में कमठनिवारो, अगनीजलता नाग उवारो।
वैरी करमन मारो तपबल धारनाजी तन मन० ॥ १ ॥
जीवाजीव द्रव्य बतलाये, सब जीवन के भरम मिटाये।
शिवमारग दरसाये, दुख पर हारनाजी तन मन सा० ॥ २ ॥
स्याद्वाद सतभंग सुनायो, नय प्रमान निश्चय करवायो।
झूठे मत किये खंडन सतको धारनाजी तन मन० ॥ ३ ॥
न्यामत जिन पारस गुन गावे, पुनिपुनि चरनन शीस निवावे।
वीतरागसर्वज्ञ तुही हितधारनाजी तन मन सारेजी० ॥ ४ ॥

भजन नं० ११ (दादरा थियेटर)

प्रभू लीजो खबरिया हमारीजी ॥ टेक ॥
मुझको कर्म डबोते हैं इस मोहजाल में, इससे बचाओ मुझको, करूं अर्ज हाल में करो पार नवरिया हमारीजी प्रभु०॥ १ ॥
निद्रा अनादि बीचपड़ा में ही तो सोनाहूं, सुमरन नकी भक्ति निहारी योंही खोनाहूं सुधलीजो खबरिया हमारीजी प्रभु० ।२
तुम जगको त्याग जाय बसै, मुक्तद्वार में। दिखलाओ राह मुक्त कहूं बार २ में। रली मोक्ष डगरिया हमारीजी प्रभु० ॥ ३
मुझपर दया करो प्रभु होकर दयाल तुम । सुकुन्द न है तुम्हारा दास, करो प्रतिपाल तुम नहीं तुमबिन गुजरिया हमारीजी प्रभु लीजो० ॥ ४ ॥

भजन नं० १२ (दादरा थ्येटर)

चलोहूं जिनडगरिया तुम्हारीजी ।
मिले मुक्तिनगरिया हमारीजी ॥ टेक ॥

(शेर)

भटका फिरा मैं आन मगों में जगह जगह ।
भ्रमता रहा हूं नीचगतों में जगह जगह ॥
पाई अब मैं खबरिया तुम्हारीजी चलोहूं० ॥ १ ॥
भवउधि से पार आके हो सम्यक के घाटपर ।
डाले न आंख भूल कभी राजपाट पर ॥

पड़ी जिस पै नजरिया तुम्हारी जी चालो हूं जि०॥ २ ॥ बाजों की लागती है भयानक भनक मुझे, भाता नहीं है राग जगत् का तनक मुझे, सुन शासन बसरिया तुम्हारी जी । चालो हूंजि० ॥ ३ ॥ करमों की घास फेंकी प्रभू ने उखाड़ कर, वैराग्न की बढाई है खेती की बाढ़ कर, छाई करुणा चदरिया तुम्हारी जी । चालो हूं जी डगरिया० ॥४॥

१३

(दादरा थ्येटर)

लीजो २ खबरिया हमारी जी ॥ टेक ॥ धोखे में आगये हैं कुमतिया की चाल में, रक्खा है हम को बांध के कर्म्मों के जाल में, लीजो० ॥ १ ॥ बीता अनादिकाल हाल कह नहीं सक्ते, जो दुख हमें दिये है वो अब सह नहीं सक्ते, लीजो० ॥ २ ॥ तन धन का नाथ कुछ भी भरोसा मुझे नहीं, माता पिता भी कोई संगाती मेरे नहीं, लीजो० ॥३॥ सच है कहा संसार में कोई न किसी का, न्यामत को सिवा तेरे भरोसा न किसी का, लीजो० ॥४॥

१४

(प्रभु तार २ भव सिंधु०)

प्रभु तार तार भवसिंधु पार; संकट मंझार, तुम ही

अधार, दुक दो सहार, तारो तारो म्हारी नैय्या ॥टेक॥ परमाद चोर, कियो हम पै जोर, भवसिंधु पोत, दियो मंझ में वोर, तुम सम न और तारन तर नैय्या। प्रभु तार तार० ॥ १ ॥ मोहि दंड२ दियो दुख प्रचंड, कर खंड २ चहु गति में भंड, तुम हो तरंड, काढ़ो काढ़ो गहि वहियां। प्रभु० ॥ २ ॥ हग सुखदास, तेरो उदास, मेरी काट फांस, हरो भव को त्रास, हम करत आस, तुम हो जग उधरैय्या। प्रभु० ॥ ३ ॥

१५

(दादरा थ्येटर)

अधार मोरे स्वामी भव दधि से कर मुझ को पार ॥ टेक ॥ चहुं गति में रुलता फिरा मोरे स्वामी, दुखड़े सहे हैं अपार अपार, मोरे स्वामी। भव दधि० ॥ १ ॥ मिथ्या अंधेरा, मगर मोह ने घेरा, कर्मों के विकट पहार, पहार मोरे स्वामी भवदधि से कर मुझ को पार ॥ २ ॥ सातों विषय क्रोध मद लोभ माया, आये लुटेरे दहार दहार मोरे स्वामी। भवदधि से० ॥ ३ ॥ सम्पति की बेड़ी भँवर में पड़ी है, वेगी से लेना उभार। उभार मेरे स्वामी भवद० ॥ ४ ॥

१६

(तर्ज—चाहे बोलो या न बोलो)

चाहे तारो या न तारो चरणों में आ पड़ा हूं ॥टेक॥
तेरे दरश को मैं आया, मन में तुही समाया, अति दीन हो खड़ा हूं। चाहो त्यारो० ॥ १ ॥ सब जगत में फिर आया, शरना कहीं न पाया, तेरी शरन आ गिरा हूं। चाहे त्यारो० ॥ २ ॥ निज दास जान लीजे, शिव मग बताय दीजे, वन २ भटक फिरा हूं। चाहो त्यारो० ॥३॥

१७

(गज़ल)

लीजिये सुधि अय प्रभू जी, अब तो हमारी इन दिनों।
गरदिशे दुनियां से हैगी बेकरारी इन दिनों ॥टेक॥
आठ अरि घेरे पड़े हैं कर दिया खाना खराब, बचने की सूरत नहीं इन से हमारी इन दिनों। लीजि० ॥ १ ॥ गुस्सागर हा बुराज लालच से नहीं मुझ को पनाह, हो गई बन बन के तबिअत की खराबी इन दिनों। लीजि० ॥ २ ॥ क्या करूं किससे कहूं, कहां बचके इन से जाऊं मैं, कोल्हू केसे बैल जैसी गति हमारी इन दिनों। लीजि० ॥ ३ ॥ तुम को बिन जाने दयानिधि चार गति भ्रमता

रहा, अब तो कदमों की शरण लीन्ही तुम्हारी इन दिनों। लीजि० ॥ ४ ॥ तुम गरीब निवाज हो, और मैं गरीबों का गरीब, जग उद्धारक की विरद जाहर है थारी इन दिनों। लीजि० ॥ ५ ॥ सख्त आफत में फंसा हूं अय मेरे मुश्किल कुशां, कर दो मुश्किल सख्त को आसान मेरी इन दिनों। लीजि० ॥ ६ ॥ अपनी महफिल आलीका दीजे ज़रा रस्ता बता, मथुरा की ख्वाहिश बरारी होगी पूरी इन दिनों। लीजि० ॥ ७ ॥

१८

(कव्वाली)

आज जिनराज दर्शन से भयो आनंद भारी है ॥ टेक ॥ लहें ज्यों मोर घन गर्जे, सुनिधि पाये भिखारी है, तथा मो मोद की बातें, नहीं जाती उचारी है। आज० ॥ १ ॥ जगत् के देव सब देखे क्रोध भय लोभ भारी है, तुम्ही दोषावरन बिन हो कहा उपमा तिहारी है। आज० ॥ २ ॥ तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, भई चहुं गति में ख्वारी है, तुम्ही पदकंज नमते ही मोहनो धूल झारी है। आज० ॥ ३ ॥ तुम्हारी भक्ति से भविजन, भये भवसिंधु पारी है, भक्ति मोहि दीजिये अविचल सदा याचक विहारी है। आज० ॥ ४ ॥

१९

(गज़ल)

मेरी नाव भवदधि में पड़ी कर पार अब सुन लीजिये, जग बन्धु वामानंद से अरदास अब सुन लीजिये ॥ टेक ॥ है झांझरी नैय्या मेरी मंझधार गोते खा रही, वसु कर्म वाम झकोरती, जगतार अब सुन लीजिये । मेरी नाव०॥ १ ॥ गति चार जलचंर जहां बसैं दुख फाड़ फाड़ डरावते, तिन से बचाओ दीन पति इस बार अब सुन लीजिये । मेरी नाव० ॥ २ ॥ भव जल अथाही में मेरा तुम बिन नहीं है दूसरा, मेरी बांह को गहले प्रभु चितधार, अब सुन लीजिये । मेरी नाव० ॥ ३ ॥ सब कारज अब मेरे भये घट राम रत्न खुशाल है, दिन रैन जिनवर नाम का आधार, अब सुन लीजिये । मेरी नाव भवदधि में पड़ी० ॥ ४ ॥

२०

(ठुमरी झंझोटी)

नेम प्रभू की श्याम बरन छवि नयनन छाय रही, मणिमय तीन पीठ परं अम्बुजता पर अधर ठही ॥ टेक ॥ मार मार तपधार जार विधि केवल रिद्ध लई । चार

तीस अतिशय गुण नव दुग दोष नहीं ॥ नेम० ॥ १ ॥ जाहि सुरासुर नमत सतत मस्तक तें परस मही। सुरगुरु वर अम्बुज प्रफुलावन अद्भुत भान सही। नेम प्रभु० ॥३॥ धरि अनुराग विलोकत जाको, दुरित नशै सब ही दौलत महिमा अतुल जा सकी कापै जात कही नेम प्रभु० ॥४॥

२१

(गजल कव्वाली)

तुम्हारे दरश बिन स्वामी, मुझे नहीं चैन पड़ती है। छवी वैराग तेरी सामने आंखों के फिरती है॥ टेक॥ निराभूषण विगत दूषण पद्म आसन मधुर भाषन, नजर नैनों की नासा की अनी परसै गुजरती है। तुम्हारे० ॥ १ ॥ नहीं कर्मों का डर हम को, कि जब लग ध्यान चरनन में, तेरे दर्शन से सुनते हैं कर्म रेखा बदलती है। तुम्हारे० ॥ २ ॥ मिले गर स्वर्ग की सम्पति अचम्भा कौन सा इस में, तुम्हें जो नयन भर देखे गति दुरगति की टलती है। तुम्हारे० ॥ ३ ॥ हजारों मूरतें हमने बहुत सी गौर कर देखीं, शान्ति सूरत तुम्हारी सी नहीं नजरों में चढती है। तुम्हारे० ॥ ४ ॥ जगत सिरताज हो जिनराज न्यामत को दरश दीजे, तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सुधरती है। तुम्हारे० ॥ ५ ॥

२२

(चाल प्रभु तार २ भव०)

आई इन्द्र नार कर कर सिंगार, ठाढीं समुद्र द्वार, शिव देवी माय चरनन मंझार मस्तक धरि दीनों ॥टेक॥ लखि भजोरीएम, सुत भयोरी नेम, तन आकृत यमचल मोर जेम, उर आर्त प्रमोद धर कर कर लीनो । आई इन्द्र० ॥ १ ॥ दृग जोर जिन प्रभु मुख निहार, कर नमस्कार हर गोद धार, पुलकंत गात गज चढ़ दीनों । आई इन्द्रनार० ॥ २ ॥ गिर शीशधार कर नट तवार, नाटिक वियार वलि वलि जुवार, ऐरावत पै भयो हरिय नवीनों । आई० ॥ ३ ॥

२३

(पार्शनाथ स्तुति)

भुजंग प्रयातछंद—नरेन्द्रं फनेन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सुपूजे भजै नायशीशं, मुनेन्द्रं गनेन्द्रं नमै जोड़ हाथं नमों देव देवं सदा पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यौ तू छुड़ावै, महा आगतें नागतें तू बचावे, महावीर तें युद्ध में तू जितावे । महा रोग ते वंध ते तू खुलावे ॥२॥ दुखी दुख हर्त्ता सुखी सुख कर्त्ता, सदा सेवकों को

महानंद भरता, हरेयक्ष राक्षस भूतं पिशाचं, त्रिपमडाकनी विघ्न के भय अवाचं ॥ ३ ॥ दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्री को तैं भले पुत्र कीने, महा संकटों से निकाले विधाता । सबै संपदा सर्व को देहि दाता ॥४॥ महा चोर को वज्र को भय निवारै, महा पौन के पुंजतें तूं उवारे, महा क्रोध की आग को मेघ धारा । महा लोभ शैले सको वज्र भारा ॥ ५ ॥ महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं, महा कर्म्म कान्तारकों दो प्रधानं, किये नाग नागिन अधो लोक स्वामी, हरो मान को तू दैत्य को हो अकामी ॥ ६ ॥ तुम्ही कल्पवृक्षं, तुम्ही कामधेनू तुम्ही द्रव्य चिन्तामणीनाग एनं, पशू नर्क के दुख सेती छुड़ावे । महा स्वर्ग में मुक्ति में तू वसावे ॥ ७ ॥ करे लोह को हेम पापाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्ष गामी, करें सेव ताकी करें देव सेवा । सुनै वैन सोही लहै ज्ञान मेवा ॥ ८ ॥ जपै जाप ताको नहीं पाप लागे, धरै ध्यान ताके सबै दोष भाजैं, विना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तिहारी कृपा से सरे काज मेरे ॥ ९ ॥ दोहा—गनधर इन्द्र न कर सके तुम विनती भगवान । द्यानत प्रीति निहार के, कीजे आप समान ॥ १० ॥

२४

(संकट हरन वीनती)

हो दीन बंधु श्रीपती करुणानिधान जी, अब मेरी विथा क्यों न हरो वार क्या लगी ॥टेक॥ मालिक हो दो जिहान के जिनराज आप ही। एवो हुनर हमारा तुमसे छिपा नहीं। वेजान में गुनाह जो मुझ से बन गया सही, कंकरी के चोर को कटार मारिये नहीं। हो दीन ०॥१॥ दुख दर्द दिलका आपसे जिसने कहा सही। मुश्किल को हर वहर से लई है भुजा गही॥ सब वेद और पुरान में परमान है यही, आनंद कंद श्री जिनंद देव है तुही। हो दीन० ॥२॥ हाथी पै चढी जाती थी सुलोचना सती, गंगा में ग्राह ने गही गजराज की गती॥ उस वक्त में पुकार किया था तुम्हें सती, भय टारके उभार लिया हे कृपापती। हो दीन० ॥३॥ पावक प्रचंड कुन्ड में उमंड जब रहा, सीता से सत्य लेने को जब राम ने कहा, तुम ध्यान धार जानकी पग धारती तहां, तत्काल ही सरस्वच्छ हुआ कमल लहलहा। हो दीन० ॥४॥ जब चीर द्रोपदी का दुःशशासन था गहा, सब ही सभा के लोग कहते थे अहा अहा, उस वक्त भीर पीर में तुमने करी सहा, परदा ढका सती का सो यश जगत में रहा। हो दीन० ॥५॥ सम्यक्त शुद्ध

शील व्रती चंदना सती, जिसके नजीक लगती थी जाहिर रती रती, वेड़ी में पड़ी थी तुम्हें जब ध्यावती हुती, तब वीर धीर ने हरी दुख द्वंद की गती। हो दीन० ॥६॥ श्री पाल को सागर विषैं जब सेठ गिराया, उसकी रमना से रमने को आया वो वेहया, उस वक्त के संकट में सती तुम को जो ध्याया, दुख द्वंद फंद मेटके आनंद बढाया। हो दीन० ॥७॥ हरि खेन की माता जहां सौत सताया, रथ जैन का तेरा चले पीछे यों बताया, उसवक्त के अनशन में सती तुमको जो ध्याया, चक्रेश हो सुत उसके ने रथ जैन चलाया। हो दीन० ॥८॥ जब अंजना सती को हुआ गर्भ उजारा, तब सासने कलंक लगा घर से निकारा, वन वर्ग के उपसर्ग में सती तुमको चितारा प्रभु भक्त व्यक्त जान के भय देव निवारा। हो दीन० ॥ ९ ॥ सोमा से कहा जो तू सती शील विशाला, तो कुम्भ मंसे काढ भला नाग जो काला, उस वक्त तुम्हें ध्याय के सती हाथ जो डाला, तत्काल ही वह नाग हुआ फूल की माला। हो दीन० ॥१०॥ जब राज रोग था हुआ श्रीपाल राज को, मैना सती तब आपको पूजा इलाज को, तत्काल ही सुंदर किया श्रीपाल राज को, वह राज भोग भोग गया मुक्त राज को। हो दीन० ॥ ११ ॥ जब सेठ सुदर्शन को मृषा दोष लगाया, राणी के कहे भूप ने सूली पै चढाया,

उस वक्त तुम्हें सेठने निज ध्यान में ध्याया, सूली से उतार उसको सिंघासन पै विठाया। हो दीन० ॥१२॥ जब सेठ सुधन्ना जी को वापी में गिराया, ऊपर से दुष्ट थां उसे वह मारने आया उस वक्त तुम्हें सेठ ने दिल अपने में ध्याया, तत्काल ही जंजाल से तव उनको बचाया। हो दीन० ॥ १३ ॥ एक सेठ के घर में किया दारिद्र ने डेरा, भोजन का ठिकाना था नहीं सांझ सवेरा, उसवक्त तुम्हें सेठ ने जव ध्यानमें घेरा, घर उसके में झट करदिया लक्ष्मी का वसेरा। हो दीन वंध० ॥१४॥ वलिवाद में मुनि राज सो जव पार न पाया, तव रात को तलवार ले सठ मारने आया, मुनि राज ने निज ध्यान में मन लीन लगाया उस वक्त हो प्रत्यक्ष जहां जक्ष बचाया। हो दीन वंध ॥ १५॥ जव राम ने हनुमंत को गढ लंक पठाया, सीता की खवर लेन को फिलफौर सिधाया, मग बीच दो मुनि राज की लखि आग में काया, झट वार मूसल धार सों उपसर्ग वुझाया। हो दीन वं० ॥१६॥ जिन नाथ ही को माथ निवाता था उदारा, घेरे में पड़ा था सो कुलिश करन विचारा, रघुवीर ने सब पीर तहां तुर्त निकारा। हो दीन वं० ॥१७॥ रनपाल कुंवर के पड़ी थी पांव में वेड़ी उस वक्त तुम्हें ध्यान में ध्याया था सवेरी, तत्काल ही सुकुमार की सब झड़ पड़ी वेड़ी, तुम राज कुंवर की

सभी दुख द्वंद निवेरी। हो दीन० ॥ १८ ॥ जब सेठ के नंदन को डसा नाग जो कारा, उस वक्त तुम्हें पीर में धरि धीर पुकारा, तत्काल ही उस बालक का विष भूरं उतारा, वह जाग उठा सो के मानो सेज सकारा। हो दीन० ॥१६ ॥ मुनि मान तुंग को दई जब भूपने पीड़ा, ताले में किया बंद भरी लोह जंजीरा, मुनिईश ने आदीश की स्तुति की है गम्भीरा, चक्रेश्वरी तब आनके झट दूर की पीड़ा। हो दीन० ॥२०॥ शिव कोट ने हठ था किया समन्त भद्रसों, शिवपिंड की वंदन करो शंको अभद्र सों, उस वक्त स्वयम्भू रचा गुरु भाव भद्र सों, जिन चंद्र की प्रतिमा तहां प्रगटी अनंद सो। हो दीन० ॥२१ ॥ सूवे ने तुम्हें आन के फल आम चढाया, मेंडक ले चला फूल भरा भक्ति का भाया, तुम दोनों को अभिराम स्वर्ग धाम वसाया, हम आप से दातार को लखि आज ही पाया। हो दीन वं० ॥२२ ॥ कपि स्वान सिंह नवल अज बैल विचारे, तिर्यंच जिन्हे रंच न था बोध चितारे, इत्यादि को सुर धाम दे शिव धाम में धारे, हम आप से दातार को प्रभु आज निहारे। हो दीन वं० ॥२३ ॥ तुम ही अनंत जन्तु को भय भीर निवारा, वेदो पुरान में गुरु गनधर ने उचारा, हम आपकी शरणागत में आके पुकारा, तुम हो प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष इच्छित कारा। हो दीन वं० ॥२४॥

प्रभु भक्त व्यक्त जगत भगत मुक्त के दानी, आनंद कंद वृंद को हो मुक्ति के दानी, मोह दीन जान दीन वंधु पातक भानी, संसार विषम पार तार अन्तरजामी। हो दीनं० ॥ २५ ॥ करुणा निधान वान को अवं क्यों न निहारो, दानी अनंतदान के दाता हो संभारो, वृपचंद नंद वृंद का उपसर्ग निवारो, संसार विष मखार से प्रभू पार उतारो। हो दीन० ॥ २६ ॥

२५

(गजल)

मुझे आधार है तेरा तुहीं जिनराज है मेरा, पड़ा भवदधि अथाही में शरण तेरा ही हेरा है॥ टेक॥ करम जल चर भरै तामें दुखी करते हैं जानो हो, अनादि काल से जिन जी इन्हों ने मुझको घेरा है। रोप मद लोभ माया की तरंगें उठ रही ऐसी, किनारे पर से लेजा कर बीच मंझधार गेरा है। मुझे आधार० ॥ १ ॥ लोकत्रय छूटके भाई जगह ऐसी नहीं कोई, उरध पाताल मध्यन्तर काल का जान फेरा है। करमसंयोग अपंनेसे मिली जिन नाम की नौका, सेवक अब वैठके उतरो भला यह दाव तेरा है। मुझे आ० ॥२॥

२६

(मल्हार)

रुम झुम रुम झुम वरषै बदरवा, मुनि जन ठाढे तर वर तलवा ॥ टेक ॥ काली घटा तें सबही डरावे वे न डिगे मानो काठपुतलवा । रुम झुम० ॥ १ ॥ बाहर को निकसे ऐसे में ठाड़े रहैं गिरवर गिरवा । रुम झूम० ॥२॥ झंझा वायु वहै अति सियरी वेन हिले जिन बल के धरौवा रुम झुम० ॥३॥ देख सुनें जो आप सुनावे ताकी तो करहू नौछरवा । रुम झुम० ॥४॥ सुफल होय शिर पांव परस वे बुध जनके सब काज सरौवा । रुमझुम ॥ ५ ॥

२७

(गजल)

मंगल नायक भक्ति सहायक स्वामी करुना धारी, प्रभु मंगल मूर्ति सुनामी चहुं घातिया चूर अकामी, शीश नमाऊं तव गुन गाऊं तुम पर जाऊं वारी ॥ टेक॥(शेर) लगा के ध्यान आतम चिदानंद रूप दिखलाया, जराके कर्म्म रिपु आठों अमर पद आपने पाया, बिना कुछ गर्ज के तुमने हिताहित ज्ञान बतलाया, गया जो गर्ज ले तुम पै वह खुद बेगर्ज हो आया । प्रभु राग द्वेष सब त्यागे घट ज्ञान अनन्ता जागे, विघन विनाशक ज्ञान प्रकाशक भवि

जन आनंदकारी। मंगल नायक० ॥ १ ॥ तुम्हारा देश भारत में नहीं जब से हुआ आना, तभी से भेद निज पर का प्रभु हमने नहीं जाना, पड़े हैं घोर दुखों में सभी क्या रंक क्या राजा, हुई भारत की यह हालत नहीं है आब अरु दाना। जहां मक्खन दूध मलाई वहां अन्न पै बाजी आई, यह पाप हमारा नशै हत्यारा पुण्यकी हो बढवारी। मंगल नायक भक्ति० ॥२॥ नहीं है ज्ञान की बातें न तत्वों की रही चर्चा, नहीं उपयोग रुपये का बढ़ा है व्यर्थ का खर्चा, उठा व्यापार का धंधा गुलामी का लिया दरजा, छुड़ा के शिल्प शिक्षा को किया है देश का हरजा, सब नौकर होना चाहते, नहीं शिल्प कला सिखलाते, सब नौकर होके पेशा खोके, निशदिन सहते ख्वारी। मंगल नायक भक्त० ॥ ३ ॥ धरम के नाम से झगड़े यहां पै खूब होते हैं, बढाके फूट आपस की दुखों का बीज बोते हैं, निरुद्यमी आलसी हो द्रव्य अपने आप खोते हैं, हुआ है भोर उन्नति का यह भारत वासी सोते हैं, हम मेल मिलाप बढावें, कर उद्यम धन घर लावें, भारत जागे सब दुख भाजै यह ही विनती हमारी। मंगल नायक०॥४॥

२८

(सोरठ)

प्रभु हरो मेरा प्रमाद मुझे परमाद सताता है ॥टेक॥

भोर भये पूजा की बेला सो टल जाता है। सांझ समय सामायक करना याद न आता है। प्रभू हरो मेरा प्रमाद०॥१॥ गुरु भक्ति अरु शास्त्र स्वाध्याय वन नहीं आता है तप संजम अरु दान का देना मन नहीं भाताहै। प्रभू हरो० ॥ २॥ यह पट कर्म श्रावक जिन शासन दरसाता है। एक नहीं पूरा होता दिन बीता जाता है। प्रभू हरो मेरा परमाद० ॥३॥ पाता है वृप अर्थ काम शिव जो शरणाता हैं। दो शक्ती दीना नाथ सदा न्यामत गुन गाता है। प्रभू हरो० ॥४॥

२६

(लावनी देश तुम पर वार)

जाऊं जाऊं जाऊं जी आदीश्वर तुम पर वारना जी टेक ॥ प्रभु तुम गर्भ विषै जब आये पट नवमास रतन बरपाये सची सची प्रतिछाये मंगलचारना जी । जाऊं जाऊं० ॥ १ ॥ न्हवन हेत ले इन्द्र गये, आकर पांडुकशिला मेर गिर जाकर, सहस अठोतर कलश तुम सिर ढार ना जी। जाऊं जाऊं० ॥२ ॥ रतन जड़ित भूपण पहिरा कर, धारे तीन छत्र माथे पर, लाये पुष्प सो माल बना कर, तुम गल डारना जी। जाऊं जाऊं० ॥ ३॥ इन्द्र नृत्य को तुमरे आये, अष्ट द्रव्य पूजन को लाये, सारे

तुमरे चरन नवावे तुम पर वारना जी। जाऊं जाऊं ॥४॥ कुन्दन शरण तुम्हारी आयो, दर्शन पाय परम सुख पायो, स्वामी मुझको पार लगाओ, तुम जग तारना जी। जाऊं जाऊं जी आदीश्वर तुम पर वारना जी ॥ ५ ॥

३०

(लावनी तुम पर वारना०)

जाऊं जाऊं जी वामा सुत तुम पर वारना जी तुम पर वारना जी तुम पर वारना जी जाऊं जाऊं जी वामा० टेक॥विश्वसैन घर जन्म लहायौ, वामा देवी सुत कहलायो, भव्यजीव मन हरप मनायो तुम पद निरखन कारनाजी। जाऊं जाऊं०॥१॥ शचि पति सुरगन संघ भुलायो शिशु माया मय जननी धायो सहस अठोतर कलशा लायो सुर गिर पर सिर ढारना जो। जाऊं जाऊं० ॥ २ ॥ सम रस विवसन मुद्रा सोहैं देखत सुर नर मुनि मन मोहैं भुजगराज तव सिर पर जोहैं कमठस्मय के टारने जी जाऊंजाऊं॥३॥तन आभाशोभा जलधर की पैडी दरसावत शिव धर की सुर गिर भासित घटा जल धर की छटा जो शोभा कारना जी। जाऊं जाऊं जी साँवरिया०॥४॥

३१

(स्तुति व सुख आशीर्वाद)

हे प्रभु अशरण शरण तुम दीन रक्षक देव हो, काल तीनों हस्त रेखावत लखो स्वयमेव हो ॥ टेक ॥ दुख सिंधु ते तुम पार करते प्राणियों के वास्ते, तुम पंथ खोटे को छुड़ा कर लावते शुभ रास्ते ॥१ ॥ हे ईश तव जो ध्यान धरता शर्म्म वह पाता सदा, भक्त तेरा जो रहै नहीं दुख उसको हो कदा। हे प्रभु० ॥ २ ॥ डूबते को तुम सहारा अन्य कोई है नहीं, तुम सा दयाल देव भी कोई नहीं देखा कहीं। हे प्रभु अशरण०॥३॥ स्वामी तुम्हारी कीर्ति को मैं किस तरह वरनन करूं, वरनन नहीं मैं कर सकूंगा सहस रसना भी धरूं। हे प्रभु अशरन० ॥ ४ ॥ हे विभो मम भावना है राज वोही नित रहै, साम्राज्य जिस के में सदा न्याय की धारा वहै। हे प्रभु अश०॥५॥ न्याय होवे छान करके राज्य जिसके में अहो, दुख न हो जिस राज में वह ही सुशासन नित रहो, । हे प्रभु०॥६॥ दीन दुखियों के लिये बिल्कुल सताता जो न हो, साम्राज्य जिसके में कभी अन्याय भी होता न हो। हे प्रभु० ॥७॥ दोषी पुरुष ही जहां दंड पावे नीति का जहां राज हो श्रेष्ठ नर ही श्रेष्ठ हो सम्यक वही साम्राज्य हो। हे प्रभु० ॥८॥ जिस राज्य में निवसे सदा सब मग्न हों नारी व नर, आनंद की ध्वनि हो तथा चारों तरफ वा हर नगर। हे प्रभु०॥९॥

३२

(मेरी समाधि)

इतना तो करदे स्वामी जब प्राण तन से निकले, होवे समाधि पूरी जब प्राण तन से निकले ॥ टेक॥ माता पितादि जितने हैं ये कुटम्ब सारे, उनसे ममत्व छूटे जब प्राण तन से निकले । इतना० ॥ १ ॥ वैरी मेरे बहुत से होवेंगे इस जगत में, उनसे क्षमा करालूं जब प्राण तन से निकले । इतना०॥२ ॥ परिग्रह का जाल मुझ पर फैला बहुत सा स्वामी, उससे ममत्व छूटे जब प्राण तन से निकले । इतना तो करदे० ॥ ३ ॥ दुष्कर्म दुख दिखावें या रोग मुझको घेरे, प्रभू का ध्यान छूटे जब प्राण तन से निकले । इतना० ॥४॥ इच्छा क्षुधा तृषा की होवे जो उस घड़ी में उनको भी त्याग करदूं जब प्राण तनसे निकले । इतना० ॥ ५ ॥ अय नाथ अर्ज करता विनती ये ध्यान दीजे होवे सफल मनोरथ जब प्राण तन से निकले। इतना तो० ॥ ६ ॥

३३

(यह कैसे बाल बिखरे०)

तुम्हारा चंदमुख निरखै स्वपद रुचि मुझको आई है, ज्ञान चमका परापर की मुझे पहिचान आई है ॥ टेक॥

कला वढाती है दिन दिन काम रजनी विलाई है अमृत आनंद शासन ने शोक तृष्णा वुझाई है। तुम्हारा०॥१॥ जो इष्टानिष्ट में मेरी कल्पना थी नशाई है मैंने निज साध्य को साधा उपाधी सब मिटाई है। तुम्हारा० ॥ २ ॥ धन्य दिन आज का न्यामत छवी जिन देख पाई है, सुधर गई सब विगड़ी अचल सिद्धि हाथ आई है। तुम्हारा०॥३॥

३४

(तर्ज—इलाजे दर्द दिल से मसीहा०)

अपूरव है तेरी महिमा कही हम से नहीं जाती, तुम्ही सच्चे हितू सबके तुम्ही हरएक के साथी ॥ टेक ॥ पाप जब जग में फैला था गरम बाजार हिंसा का, विचारे दीन जीवों को कभी नहीं चैन थी आती। अपूरव० ॥ १ ॥ हजारों यज्ञ में लाखों हवन में जीव मरते थे, कि जिसको देख कर भर आती थी हर एक की छाती। अपूरव०॥२॥ जगत कल्यान करने को लिया औतार जब तुमने, सुरासुर चर अचर सबको तेरी वानी थी मन भाती। अपूरव० ॥ ३ ॥ दया का आपने उपदेश दुनियां में दिया आके वरने जालिमों के हाथ से दुनियां थी दुख पाती। अपूरव०॥ ४ ॥ जो था पाखंड दुनियां में हुआ सब दूर इक दम में, धुजा-हरस नजर आने लगी जिनमत की

लहराती। अपूरव०॥ ५ ॥ जगत कर्ता के और हिंसा के जो झूठे मसायल थे, न्याय परमाण से तुमने किया रद्द सब को इक साथी। अपूरव० ॥ ६ ॥ हटा हिंसा किया तुमने दया मय धर्म को जारी, न्यामत जात बलिहारी है दुनियां यश तेरा गाती। अपूरव० ॥७॥

३५

(स्तुति चाल लावनी)

हे करुणा सागर त्रिजगत के हितकारी, लखि निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी ॥ टेक ॥ जो एक ग्राम पति जन की विपता टारे, मनोवांछित जन के कार्य्य क्षण में सारे, तो तुम त्रिभुवन के ईश्वर विश्व पुकारे, विश्वास भक्त ताही विधि उर में धारे, फिर भूल गये क्यों ईश हमारी वारी, लखि निज शरणागत हरो विपति हमारी ॥ १ ॥ मैं निज दुख बरनन करों कहा जग स्वामी, तुम तो सब जानत घट २ अन्तर्य्यामी, तुम सम दर्शी सर्वज्ञ यशस्वी नामी, मम हरो अविद्या प्रगटे सुख आगामी, वर भक्ति तुम्हारी लगै हृदय को प्यारी। लखि निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी० ॥ २ ॥ तुम अधमोद्धारक विरद जगत में छाया, मैं सुना सन्त शारद गनेश जो गाया, यासे आश्रय तक शरण तुम्हारी आया, सब हरो हमारा संकट

करके दाया तुमको कुछभी नही अशक्य विपुल वलधारी; लखि निज शरणागत हरो विपती हमारी ।।३।। ज्यों मात पिता नही शिशुके दोष निहारे, पाले सप्रेम अरु सर्व आपदा टाले, तुम विश्व पिता ज्योंही हम निश्चय धारे, या से शरणागत हो के विनय उचारे, जन नाथुराम यह जाचत वारम्बारी । लखि निजशरणात हरो विपती हमारी ।।४।।

३६

(आरती)

जय जिनवर देवा प्रभु जय जिन वर देवा, आरती तुमरी तारों दीजे प्रभु नित सेवा ॐ जय ॐ जय जिन वर देवा ।। टेक ।। कनक सिंहासन मनिमय ऊपर राजैं, चौंसठ चमर ढुरैं सित शोभा अती छाजै ॐ जय ० ।। १ ।। तीन छत्र सिर ऊपर सोहै झज़र में मोती दिपै महाभा-मंडल कोटिक रवि जोती ॐ जय ॐ जय० ।। २ ।। फूल पत्र फल संजुत तरु अशोक छाया पाश्व वरण पुष्पांजलि वरषा झड़ लाया ॐ जय० ।। ३ ।। दिव्य वचन सव भाषा गर्भित, शिव मग संकेत दुन्दुभि ध्वनी नभ वाजत मोदन मन हेतु ॐ जय० ।।४।। इन अष्टप्रातिहारज संयुत प्रभु जी अति सोहैं सुर नर मुनी भविजन का निरखत ॐ जय ० ।। ५ ।। सहस एक अठ लक्षण संजुत शोभित

तन प्रभू का, सासोश्वास सुगंधित पद्मासन नीका। ओं जय० ॥ ६ ॥ चौंतीस अतिशय शोभित पैंतिस गुणवानी निज निज भाषा मांही समझत सब प्राणी ओं जय० ॥७॥ ज्ञान अनन्ता दर्शन सुख वीर-जनंता लोकालोक यथारथ जानत भगवन्ता ओं जय० ॥ ८ ॥ चौंसठि इन्द्र सहित इन्द्राणी देवी अरु देवा नाचै गावै अद्भुत सुर सारे सेवा ओं जय० ॥९ ॥ नाटक निरख भविक जन मनमें हम भावैं ये जड़ पुद्गल तन रचना तज आतम ध्यावे। ओं जय० ॥१०॥ या महिमा को देख भविक जन जनम सुफल माने, धन सुर धन सुरललना जिन भक्ति ठाने॥ ओं० जय० ॥ ११ ॥ वीतराग जिनवर की आरति रुचि सों जो गावै, अमरदास मनवाञ्छित निश्चै फल पावै। ओं जय० १२॥

३७

(आरती दूसरी)

जय जय जिन देवा जय श्री जिन देवा खेवा पार लगादो करूं चरन सेवा ॥ टेक ॥ वंदो श्री अरहन्त परम गुरु परम दयाधारी प्रभु परम दयाधारी, परमात्म पुरुपोतम जग जन हितकारी जय। जय०॥१॥ प्रभू भव जल पतित उधारन चरण शरण थारी प्रभु चरण शरण थारी सद्भक्ता-

निरलोभी करम भरम हारी। जय जय० ॥ २ ॥ थारो ध्यान करत अरविंद मातंगज लखि समताधारी प्रभु लखि समताधारी, तीर्थंकर पद पारस पाय भयो भवतारी। जय जय० ॥३॥ निहिताश्रव मुनि मारन आयो मृगपति बल धारी, प्रभु मृगपति बलधारी, भयो वीर तीर्थंकर सुनि शिक्षा थारी। जय जय० ॥४॥ स्वामी दोष कुशील दियो सीता को, दुर्जन अविचारी प्रभु दुर्जन अविचारी, कूद पड़ी अग्नी में लेय शरण थारी। जय जय० ॥५॥ खिल गये कमल अगन में स्वामी चढ़गये जल भारी, प्रभु चढ़गये जल भारी, अच्युतेन्द्र तुम कीनो फिर न होय नारी। जय जय० ॥ ६ ॥ बलि ने यज्ञ रचाय दुखी किये मुनि जन ब्रह्मचारी प्रभु मुनि जन ब्रह्मचारी, विष्णुकुमार मुनीश्वर कियो तब उपगारी। जय जय० ॥ ७ ॥ सर्प किये फूलन के गजरे जिन सेवा धारी, प्रभु जिन सेवा धारी, विदित कथा सतियन की जानत नर नारी। जय जय० ॥८॥

३८

(आरती तीसरी)

सांझ समय जिन वंदो भवि तुम सांझ समय जिन वंदो ॥ टेक ॥ लेकर दीपक आगे वालो, कटत पाप के फंदो। भवि तुम० ॥ १ ॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर

भेटत होय आनंदो । भवि तु० ॥ २ ॥ पुष्प माल धरि ध्यान लगाऊं खेऊं धूप सुगंधो । भवि तुम० ॥ ३ ॥ रतन जड़ित की करूं जी आरती वाजत ताल मृदंगो । भवि तुम० ॥४॥ कह जिन दास सुमरि जिय अपने सुमरत होय अनंदो । भवि तुम० ॥ ५ ॥

३९

(गजल)

प्रभू मैं शरण हूं तेरी विपत को तुम हरो मेरी ॥टेक॥
मुझे कर्म्मों ने घेरा है चहुं गती मांह पेरया है, ये हैं दिग्गज मेरे वैरी विपत को तुम हरो मेरी । प्रभु० ॥ १ ॥
विपय विपरस में फूला हूं जगत माया में भूला हूं, कुमति मति आन मोहि घेरी, विपत को तुम हरो मेरी । प्रभु० ॥२॥
समय थोड़ा रहा बाकी, अवधि इस देह की पाकी, करूं क्या आय जम फेरी विपत को तुम हरो मेरी । प्रभू० ॥३॥
पतित मुझसा न है कोई, पतित तारक हो तुम सोई लगाते क्यों हो अब देरी विपत को तुम हरो मेरी । प्रभू० ॥ ४॥
त्रिलोकीनाथ कृपासिंधु दया करिये जगत बंधू, कुगति हरिये दास केरी, विपति को तुम हरो । मेरी प्रभू० ॥५॥

४०

(उपदेशी)

सब स्वारथ का संसार है तू किस पै प्यार करता

है ॥ टेक ॥ जब तक प्यारे करे कमाई, तब तक सारे करें बड़ाई, चचा भतीजे सुसर जमाई, कुनबा ताबेदार है दिल भरीका दिल भरता है। तू किस पै प्यार करता है०॥१॥ जब तू शक्ति हीन होजावे, अपनी हाजत कुछ फरमावे यार दोस्त कोई निकट न आवे करत न कोई सतकार है, कमबख्त नाम पड़ता है। तू किस पै प्यार करता है० ॥२॥ जिसके प्यार में प्रभू हि विसारा, धर्म्मा-धर्म्म न तनिक विचारा, उसं कुनबे ने किया किनारा अब नहीं कोई गमख्वार है, कहिर के यही मरता है। तू किस पै प्यार करता है० ॥ ३ ॥ मत बन जान बूझ कर भोला, है खुद गर्ज यार मिवोला यह 'वसुधा' मानुप का चोला फिर मिलना दुश्वार है, जप उसे जो दुख हरता है। तू किस पै० ॥ ४ ॥

४१

(भजन उपदेशी)

सुनियो भारत के सरदार, म्हारी धीर बंधानेवाले॥ टेक ॥ देखो इस भारत के बीच क्रिया कैसी होगई नीच, बैठे हाथ दान कर खींच लाखों द्रव्य रखाने वाले। सुनि० ॥ १ ॥ भूखों की नहीं सुनते टेर, उनको लालच ने लिया घेर, करते दया धर्म में देर धन को व्यर्थ लुटाने

वाले। सुनियो० ॥ ३॥ बन गये मुसलमान ईसाई लाखों ने है जान गवाई होते कोई नहीं सहाई, म्हारे प्राण बचाने वाले। सुनियो०॥४॥ आये अब तुमरे दरबार, न्यामत दिल में दया विचार, करो अनाथों का उद्धार दया का भाव दिखाने वाले। सुनियो० ॥५॥

४२

(गजल)

देख कर हालत वतन की अब रहा जाता नहीं बिन कहे मन की विथा यह धीर मन आता नहीं ॥टेक॥ ऐशो अशरत के वो सामां हाय भारत क्या हुये, क्या हुई पहली वो हालत कुछ कहा जाता नहीं। देख कर हालत० ॥ १॥ प्रेम की खेती है सूखी फूट का है बाग सब्ज क्या, तुझे भारत वतन अब प्रेम कुछ भाता नहीं। देख कर० ॥२॥ सब हैं अपनी अपनी उन्नति सीढ़ियों पर चढ़ रहे तूने दी क्यों हार हिम्मत क्या चढ़ा जाता नहीं। देख कर० ॥ ३॥ जुल्म क्या क्या कर चुका है बस कर चरखे कुहन नीम-जां हम हो चुके हैं गम सहा जाता नहीं॥४॥ याद बरबादी जब अपनी आती है हम को कभी, वसुधा रोदेती है पर कुछ बस बसाता नहीं। देख कर हालत वत०॥५॥

४३

(लावनी)

अवला तन लखि अल्प धीर जो मोही मानुष फंसते हैं सो दुर्बुद्धी छोड़ नर्क में पड़ते हैं ॥ टेक ॥
मृगनयनी के नयन रसीले श्याम श्वेत छवि अरुनाई, चंचलताई निरख कर नर की न रहे थिरथाई, मुख सरोज अरु उर सरोज लखि मूरख मन अति उलझाई, परबसताई महा दुख आप आप को प्रगटाई, मनके चलते लाज तजैं फिर चलते खोटे रस्ते हैं। अवला तन० ॥ १ ॥
लज्जा रहित कुधी पर त्रिय को निरख निरख बहु बात करें, परिचय राखें वक्त पर हो निश्शंक वृषघात करें कर विश्वास निसंक अंक भर नर त्रिय शीतल गात करें, अधम काज यह न होवे जाहर यह विचार दिनरात करें, शंका तज गुरु तात मात की पर नारी से हंसते हैं। अवला० ॥ २ ॥ लज्जावान पुरुष भी क्रम क्रम शंका तज विश्वास करे फिर क्रम क्रम से प्रिय वचन सुनत उर आंस करे प्रीत बढ़ै आशक्त हौंय अति दोनों वचनालाप करें, मिल कर रहना विरह में दोनों उर सन्ताप करें, क्षोभित मन पापी नर कुल की मर्य्यादा सो खोते हैं। अवला० ॥ ३ ॥
एकाकी कामिन से नर को कभी न बतलाना चाहिये अंधकार में लाज तज कभी न ढिग जाना चाहिये शील

रहित नर नारी की सोहबत में नहीं आना चाहिये, जो हित चाहो 'जिनेश्वर' बचन हृदय लाना चाहिये विषय फंसे नर को विधि विषधर समय२ प्रति डसते हैं। अबला तन० ॥ ४ ॥

४४

(घड़ी क्या कहती है)

टिक टिक करती घड़ी रात दिन हम को यही सिखाती है, जल्दी करो काम मत चूको घड़ी वीतती जाती है। महा शक्ति शाली क्षण क्षण की यदि सहायता पाओगे, तो भी शीघ्र नहीं कुछ दिन में तुम मनुष्य वन जाओगे टिक०॥१॥ पूरी करनी है जीवन वड़ी २ जिम्मेदारी, जिसके बिना न होसकते हो मनुष्यता के अधिकारी इससे जग प्रसिद्ध उद्योगी महाजनों की गैल गहो, उठो और आलस्य छोड़ कर प्रतिक्षण के सन्निकट रहो। टिक २ करती० ॥ २ ॥ क्षण को नहीं तुम्हारी चिन्ता तुम्हें छोड़ भग जाता है, सावधान! वह गया हुआ फिर कभी न वापिस आता है इस कारण से तुम सचेत हो करो रात दिन रखवाली, करते रहो काम कुछ भरसक कभी नहीं वैठो ठाली। टिक टिक करती०॥३॥ सदा सामने से वह प्रति क्षण सुख दुख के साधन सारे, साथ लिये भागा जाताहै रुका

न रोक रोक हारे; विघ्न तुम्हारे कर्म्मों से जब उसकी गति में आवेगा, तब वह खुश होकर सुख संपति शान्ति तुम्हें दे जावेगा। टिक टिक करती०॥४॥ क्षण का है आलस्य शत्रु यदि उसके मित्र कहाओगे, तो क्षण दुख दे दे मारेगा तुम अधीर होजाओगे, जो क्षण बीत चुके हैं उस में तुमने क्या क्या काम किये, या मानुष्य कहलाने के शुभ साधन कितने जान लिये। टिक टिक क० ॥५॥ शोक शोक तुमने किया कुछ तुम्हें न लज्जा आती है, उठो देर मत करो जवानो घड़ी बीतती जाती है। टिक टिक करती घड़ी रात दिन हमको यही सुनाती है, रामनरेश सुनो यह स्वर से क्षण क्षण के गुण गाती है॥ ६ ॥

४५

(स्वारथ महिमा)

समझ मन स्वारथका संसार ॥ टेक ॥ हरे वृक्ष पर पक्षी बैठा, गावै राग मल्हार। सूखा वृक्ष, गयो उड़ पक्षी तजकर दम में प्यार। समझ मन० ॥१॥ बैल वही मालिक घर आवत तावत बांधो द्वार, वृद्ध भयो तब नेह न कीनो दीनो तुरत विसार, समझ मन० ॥ २॥ पुत्र कमाऊ सब घर चाहैं पानी पीवै वार, भयो निखट्टू दुर दुर पर २ होवत बारम्बार। समझ मन० ॥ ३॥ ताल पाल पै डेरा

कीना सारस नीर निहार, सूखा नीर ताल को तज गये उड़ गये पंख पसार। समझ मन स्वारथ० ॥ ४ ॥ जब तक स्वारथ सधै तभी तक अपना सब परिवार, नातर बात न बूझै कोई सब विछड़े संग छार। समझ मन०॥५॥ स्वारथ तज जिन गह परमारथ किया जगत उपकार, ज्योती ऐसे अमर देव के गुण चिन्ते हरवार। समझ मन० ॥ ६ ॥

४६

(दशलक्षण धर्म्म)

धरम के हैं दश लक्षण जान ॥टेक॥ क्षमा, मार्दव, और आर्जव, सत्य शौच गुण खान। संजम, तप, और त्याग अकिंचन ब्रह्मचर्य्य महान। धर्म के हैं दश लक्ष० ॥ १ ॥ क्रोध नशाओ, मान मिटाओ, छल छोड़ो बुधवान, झूठ वचन कबहू मत बोलो जांय भले ही प्रान धर्म्म के दश० ॥ २ ॥ त्यागो लोभ करो वश इन्द्रिय निज आतम का ध्यान, धन सम्पति दो दया धर्म्म और जाति देश हित दान। धर्म्म के० ॥३॥ तजो परिग्रह लेश न राखो इच्छा दुख की खान, राखो बल और वीर्य्य सुरक्षित होय ब्रह्म का ज्ञान। धरम के हैं०॥४ ॥ या सै दुख दारिद्र नसै सब हो पापों की हान, जोती धार धरम दश लक्षण जो चाहै कल्याण। धर्म्म के हैं दश लक्षण० ॥ ५ ॥

४७

(हंस नामा)

अजब तमाशा देखा हमने कहैं गुरु सुन चेरा रे ॥ टेक ॥ एक वृक्ष पर एक हंस ने कीना रैन बसेरा रे। सुन्दर पक्षी देख उसे सब पक्षियों ने आ घेरा रे। अजब० ॥१॥ सब ने कहा हंस से यहां पर कोई दिन कीजे डेरा रे। ठहरा हंस वहीं उन सबसे उपजा प्रेम घनेरा रे। अजब तमा० ॥२॥ एक दिवस यह कहा हंस ने हम कल जांय सवेरा। यह सुन पक्षी दुख माना हम संग तजैं न तेरा रे अजब तमाशा० ॥३॥ सुबह हंस ने लई उडेरी पक्षिन लिया उडेरा रे। कोई कोस दो कोस पै हारा, सबही ने दम गेरा रे। अजब० ॥४॥ सब पक्षी रह गये यहां पर उड़ गया हंस अकेला रे। या विधि जोति जाय अकेला ना संगी कोई मेरा रे अजब० ॥५॥

४८

(उपदेशी)

मुसाफिर क्यों पड़ा सोता भरोसा है न इक पलका, दमा दम बज रहा डंका तमाशा है चला चलका ॥टेक॥ सुबह जो तख्त शाही पर बड़ी सज धज से बैठे थे। दुपहरे वक्त में उनका हुआ है वास जंगल का। मुसाफिर०

॥१॥ कहाँ है राम अरु लछमण कहां रावन से बलधारी, कहां हनुमन्त से योधा पता जिनके न था बल का। मुसाफिर०॥२॥ उन्हों को काल ने खाया तुझे भी काल खावेगा, सफर सामान उठकर तू बनाले बोझको हलका। मुसाफिर० ॥३॥ जरासी जिंदगानी पर, न इतना मान कर मूरख। यह बीते जिंदगी पल में कि जैसे बुद बुदा जलका। मुसाफिर० ॥ ४ ॥ नसीहत मान ले जोती, उमर पल पल में कम होती। जो करना आज ही करले, भरोसा कर न कुछ कल का। मुसाफिर० ॥ ५ ॥

४६

(कव्वाली)

जैन मत जब से घटा मूरख ज़माना होगया, यानी सच्चा ज्ञान इकदम रवाना होगया ॥टेक॥ गल्तफ़हमी झूठ ला-इल्मी गई हद्दसे गुज़र, सच अगर पूछो तो सब उलटा ज़माना होगया ॥ जैनमत० ॥१॥ जाते पाक ईश्वर को करता हरता दुनिया का कहें, हाय भारत आजकल बिल्कुल दिवाना होगया॥ जैनमत०॥२॥ कर्मफल दाता भी कोई और है कहने लगे, कैसी उलटी बात का दिलमें ठिकाना होगया ॥ जैनमत० ॥३॥ कोई कोई जीव की हस्ती से भी मुनकिर हुए, कैसा यह अज्ञान का दिल पै

निशाना होगया । जैनमत० ॥४॥ जैनमत प्रचार हटने का नतीजा देखलो, रहम उल्फत छोड़कर हिंसक ज़माना होगया । जैनमत० ॥५॥ झूठ चोरी और दगाबाज़ी कहां तक बढ़ गई, पाप करते आप कलजुग का बहाना होगया । जैनमत० ॥६॥ बुग्ज़ कीना फूट घर २ में नज़र आने लगी, वात्सल्य जाता रहा अपना बिगाना होगया । जैनमत० ॥७॥ न्यायमत जैनमत की अब तो इशाअत कीजिये, सोते २ मोह निद्रामें ज़माना होगया । जैनमत० ॥८॥

५०

(जुए का ड्रामा)

जुआरी—आओ खेलें जुआ आओ खेलें जुआ, पलमें
फकीर अमीर हुआ, आओ खेलें जुआ० ॥

विरोधी—मत खेलो जुआ, मत खेलो जुआ, पल में
अमीर फकीर हुआ, मत खेलो जुआ० ॥

जुएबाज़ की सुनो कहानी, मन चित लाके भाई ।
द्रोपदी नारी पांडव हारे, ज़रा शर्म्म नहीं आई ॥ मत
खेलो जुआ० ॥ १ ॥

जुआरी—जुआ खेला जो दुर्योधन ने, जीती पांडव नार ।
एक घड़ी में बनगये यारो परनारी भरतार ॥ आओ
खेलें जुआ, आओ खेलें जुआ० ॥२॥

विरोधी—जुएबाज़ और चोर डाकू का कौन करे इतबार ।
जिधर जावे धक्के पावे, मिले न पाई उधार ।। मत
खेलो जुआ० ।।३।।
जुआरी—जुएबाज़ और चोर डाकू से कोई न करते तक-
रार । जिधर जावे दौलत पावे, मिलें एक के चार ।
आओ खेलें जुआ, आओ खेलें जुआ० ।।४।।
विरोधी—जुएबाज़ के पास जो होता, एकदम देत लगाय ।
बाल बच्चे चाहें भूखे मरजांय, करे नहीं परवाय ।।
मत खेलो जुआ मत खेलो जुआ पलमें, अमीर० ।।५।।
जुआरी—जुएबाज़ के पास जो होता, करता मौजबहार ।
ऐश उड़ावे घर में नारी, मजे करे परवार ।। आओ
खेलें जुआ आओ खेलें जुआ, पलमें फकीर ०।।६।।
विरोधी—अगर वो जावे हार जुएमें, फिर चोरीवो करते ।
हरदम नानक राज द्वारे, दंड भोगने पड़ते ।। मत
खेलो जुआ मत खेलो जुआ, पलमें अमीर० ।।७।।
जुआरी—बेशक जावें हार जुए में, फिक्र नहीं वो करते ।
अगले दिन जब जीत के आवें, मोटर गाड़ी चढ़ते ।।
आओ खेलें जुआ आओ खेलें जुआ० ।।८।।
विरोधी—सब विषयों में विषय यह खोटा, समझो मेरे
भाई । नर्क बीच लेजाने वाला समझो मेरे भाई ।।
मत खेलो जुआ मत खेलो जुआ, पलमें० ।। ९।।

जुआरी—सुनी नसीहत तेरी भाई, दिलमें किया ख़याल। इस पापी चण्डाल जुए ने, कर दीना कंगाल। नहीं खेलूं जुआ, नहिं खेलूं जुआ ॥१०॥

विरोधी—विद्यानन्द भव भव तिरना प्यारे, सबसे नियम कराओ। एस. आर. कहै लानत भेजो, खाक इस के सर डालो। मत खेलो० ॥११॥

जुआरी—जुआ बड़ा जंजाल है भाइयो इसका मत लो नाम। पैसे मारो फेंक ज़मीं से दूरसे करो प्रणाम। नहीं खेलूं जुआ, नहीं खेलूं जुआ, आज से मैंने नियम लिया ॥१२॥

५१

(सट्टे का ड्रामा)

सट्टेबाज़—ज़रा सट्टा लगा, जरा सट्टा लगा, घर बैठे तू मौज उड़ा।

विरोधी—मत सट्टा लगा, मत सट्टा लगा, कर देगा यह तुझको तबाह॥ मत सट्टा०॥ सट्टेबाज की कहूं कहानी, सुनलो मेरे भाई। धन तो सारा दिया लुटा फिर होश ज़रा नही आई, मत सट्टा लगा, मत सट्टा लगा० ॥१॥

सट्टेवाज्-सट्टे की कुछ कहूं हकीकत सुनलो करके कान।
एक अंक जो निकले बस फिर होजावे धनवान।
जरा सट्टा लगा, जरा सट्टा लगा० ॥२॥
विरोधी-एक अंक की आशा करते, हो जाते कंगाल।
जगह जगह पर मारे फिरते, बुरा होय अहवाल।
मत सट्टा लगा, मत सट्टा लगा० ॥३॥
सट्टेवाज-एक दाव जो आजावे बस फिर हो मौज बहार।
एक के बदले मिलें कईसौ, क्या अच्छा व्यौपार।
जरा सट्टा लगा० ॥४॥
विरोधी-सट्टेबाज कोई धनी न होता, देखे सब कंगाल।
बुरा शौक सट्टे का भाई, कर देता पामाल। मत
सट्टा लगा० ॥५॥
सट्टेवाज-सट्टे में जो जीत के आवे, पावे ऐश आराम।
मज़ा करे परवार जोसारा, क्या अच्छा यह काम।
जरा सट्टा लगा० ॥६॥
विरोधी- सट्टे के शौकीन जो भाई, ढूंढैं साधु फकीर।
सौ २ गाली सुनकर आवें, क्या उलटी तकदीर।
मत सट्टा लगा० ॥७॥
सट्टेवाज-साधू सन्त जो गाली देवें, तू क्या जाने यार।
सट्टेबाज ही अर्थ निकालें, दिल में सोच विचार।
जरा सट्टा लगा० ॥८॥

विरोधी–सट्टे में कुछ नहीं भलाई, हटको छोड़ तू भाई।
सी. एच. लाल कहे तुमसों, ये आखिर में दुखदाई।
मत सट्टा लगा० ॥६॥

सट्टेबाज–सुनी नसीहत तेरी भाई, दिल में किया खयाल।
इस पापी चण्डाल सट्टे ने, कर दीना कंगाल। नहीं
सट्टा लगाऊं नहीं सट्टा लगाऊं, आज से लो मैं
हलफ़ उठाऊं ॥१०॥

५२

(मांस निषेध)

मतना मारो यार, पशु जुबां के कारण ॥टेक॥ गर तुम्हें
कोई आ मारे, हो कैसा दुःख तुम्हारे, जरा तो करो
विचार। पशू जुबां के कारण मतना मारो यार ॥१॥
ऐसा ही दुख वो पावें, तुम्हें तरस जरा ना आवे, पड़े
सौ २ धिक्कार। पशू जुबांके कारण मतना मारो यार ॥२॥
दुनिया के जीव ना थारे, फिर क्यों तू उनको मारे, तेरा
है क्या अधिकार। पशू जुबांके कारण० ॥३॥ नहीं मनुष्य
की खास ग़िज़ा है, खावे जो बड़ी सज़ा है, कहे जैनी
ललकार। पशु जुबां के कारण मतना मारो यार ०॥४॥

५३

(शराब का ड्रामा)

शराबी–भरजाम भरजाम भरजाम पियूं गुल लाला, बनूं जेंटिलमेंन मैं आला। जिसपै हो उसकी रहमत, उसे मिलती ऐसी नेअमत। भरजाम० ॥१॥

विरोधी–जो पिये बनादे वहशी, यह जान की दुश्मन ऐसी लख लानत मुंह पै थू, अमल ऐसे की ऐसी तैसी। ख्वाह कितना हो ख्वांदा, झटपट कर देती अन्धा, बे अकल पिलावें ज़िन्दा, दयानन्द फेल ये गन्दा। लख लानत मुंह पै० ॥२॥

शराबी–रम विस्की बरांडी देशी, पीलो दिल चाहे जैसी।

बिरोधी–लख लानत मुंह पै थू, अमल ऐसेकी ऐसी तैसी।

शराबी–भरजाम भरजाम भरजाम पियूं गुल लाला, बनूं जन्टिलमेंन मैं आला, हो जिसपै उसकी रहमत, मिले उसको ऐसी नेमत।

विरोधी—दे त्याग नशा ये भाई, ज़र दरकी करै सफाई जिसने ये मुंह से लगाई, ना पास रही इक पाई।

शराबी—ये बातें बनाते कैसी, करते दीवाने जैसी।

विरोधी—लख लानत मुंहपै थू, अमल ऐसेकी ऐसी तैसी।

शराबी—क्या मजेदार यह प्याला, पीकर होजा मतवाला, जिस्को यह मिला निवाला, उसे समझो किस्मत वाला।

विरोधी—वाह मजेदार यह प्याला, मोरीमें गिरानेवाला
जूतों से पिटाने वाला, इज्जत को घटाने वाला ।
शराबी—यह मस्त बनावे ऐसा, वस बादशाह है जैसा ।
विरोधी—(शेर) अय अहले हिंद तुमको खोया शराब ने,
जाहो जलाल मरतबा खोया शराब ने । बेसुध पड़े
हो ऐसे कि अपनी खबर नहीं, उल्लू बना दिया
तुम्हें गोया शराब ने ॥ अब मंजिले तरक्की पर
पहुंचोगे किस तरह, कांटों का बीज राह में बोया
शराब ने ॥ ग़ैरत नहीं तुम्हें जरा देखो तो हालको,
फिहरिस्त नंगों के नाम में लिखाया शराब ने ॥

(चलत)

यह हालत देखो कैसी, बिल्कुल है मुर्दा जैसी,
अब होश में आओ छोड़ नशेको इसकी ऐसी तैसी।
शराबी—क्या अजब हाल हुआ मेरा, किस बदमस्ती ने घेरा,
यह कैसा छाया अन्धेरा, दिखता नहीं शाम सवेरा ।
बिरोधी—तू हठको छोड़दे भाई, नहीं इसमें कोई बड़ाई,
यह नशा बड़ा दुखदाई, कहता हूं सुन चितलाई।
शराबी—तेरी मान नसीहत छोड़ूं, बोतल को जमींमें तोड़ूं
ना पियूं कभी यह प्याला, बे इज्ज़त करने वाला।
ना पियो कोई यह प्याला, लानत २ यह प्याला ॥

———

५४

(भजन—शराब निषेध)

राम नाम रस के एवज़ में, शराब का अब है प्याला, पिलादे साक़ी, रहै न बाकी, कुछ बोतल में गुललाला ॥ पी पी शराब बनकर नवाब, गलियों में टक्कर खाते हैं। अड़ंग बड़ंग मुंह से बकते हैं, टेढ़ी चाल दिखाते हैं। नशे का चक्कर जिस दम आया, नाली में गिर जाते हैं। कम करनेको नशा महरबान, कुत्ते उन्हें न्हलाते हैं। नंबर वन की मुंह में बरांडी, छोड़ रहा कुत्ता काला। पिलादे साक़ी रहै न बाकी, कुछ बोतल में गुललाला ॥ १ ॥ भंगी और भिस्ती ने जब यह आकर देखा नज्जारा। नाली में से उठ ओ भड़वे, कहां से आया हत्यारा। कौन कहै सोओ न पलंग पै, यह तो उल्लू घर मारा। टांग पकड़ भंगी ने खींची, जोर से एक पंजर मारा। ऐसा केस एक दिन हमने आंखों देखा भाला। पिलादे साकी रहै न बाकी, कुछ बोतल में गुल लाला ॥ २ ॥ आते जाते लोग देखकर कहने लगे मयख्वार पड़ा, कोई कहै भले घरोंका नालायक बदकार पड़ा। कोई कहै मोहताज है भूखा, पैसेसे लाचार पड़ा। कोई कहै हैजे प्लेग का ताजा ही बीमार पड़ा। सिविल पुलिस में खबर करादो, पिलादे साकी रहैन बाकी

कुछ० ॥ ३ ॥ घर जमीन बरबाद करी, घर पै औरत बीबी रोती। बेच दिये मेरे हंसले कठले, बचे नथली के मोती। एक रोज जब मिली न पाई, कलाल को जा दी धोती। बेहद पीने वालों की अकसर, हालत ऐसी होती। रामचंद सतसंग रंगका, पिया करो मित्रो प्याला। पिलादे साकी रहे न बाकी कुछ बोतल में गुललाला ॥ ४ ॥

५५

(भजन—शराब निषेध)

मयकशी में देखलो, यारो मजा कुछ भी नहीं, खुदबखुद बेखुद बने, लेकिन मजा कुछ भी नहीं ॥ टेक ॥ सारे घर का मालोज़र, बोतल के रस्ते खोदिया। मुफ्त में इज्जत गई, पाया मज़ा कुछ भी नहीं ॥ मय कशी० ॥१॥ जब नशा उतरा तो हालत, और बदतर होगई। खाली बोतल देखकर बोले मज़ा कुछ भी नहीं ॥मयकशी०॥२॥ रात दिन नारी बिचारी, जान को रोया करे। ऐसी मय-ख्वारी पै लानत है मज़ा कुछभी नहीं ॥ मयकशी० ॥३॥ न्यायमत इस मय की उलफत का, नतीजा देख लो। बस खराबी के सिवा इसमें मजा कुछभी नहीं ॥ मयकशी में देखलो यारो मजा कुछ भी नहीं० ॥ ४ ॥

५६

(भंग का ड्रामा)

पीने वाला—चलो भंगिया पियें, चलो भंगिया पियें, इस बिन मूरख योंही जियें ॥ कून्डी सोटा बजे दमादम, छने छनाछन भंग । मजा जिंदगी का जब यारों, हो चुल्लू में दंग । चलो भंगिया पियें चलो भंगिया पियें॥१॥

विरोधी—मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो, इस से अच्छे योंही जियो ॥ खुश्की लावे अकल नशावे, बेसुध करके डारे । होश रहै नहीं दीन दुनी का, बिना मौत ही मारे ॥ मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो इस बिना० ॥ २ ॥

पीने वाला—तू क्या जाने स्वाद भंग का, है यह रस अनमोल । मगन करे आनंद बढ़ावे, दे घट के पट खोल ॥ चलो भंगिया पियें० ॥ ३ ॥

विरोधी—सिर घूमे और नथने सूखें, नींद घनेरी आवे, कल की बात रही कल ऊपर, भूल अभी की जावे । मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो० ॥४॥

पीने वाला—भंग नहीं यह शिव की बूटी, अजर अमर है करती । जनम जनम के पाप नशाकर, सब रोगोंको हरती ॥ चलो भंगिया पियें चलो भंगिया पियें ॥५॥

विरोधी—भंग नहीं यह विप की पत्तियां, करे मनुप को ख्वार। जीते जी अंधा कर देती, फिर नरकों दे डार ॥ मत भंगिया पिये मत भंगिया पिये ॥ ६॥

पीने वाला—कूंडीमें खुद वसै कन्हैया, अर सोटेमें श्याम। विजिया में भगवान वसें हैं, रगड़ रगड़ में राम ॥ चलो भंगिया पियें चलो भंगिया पियें ॥ ७ ॥

विरोधी—अरे भंग के पीने वालो, भंग वुद्धि हर लेत। होशियार और चतुर मर्द को, खरा गधा कर देत॥ मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो० ॥ ८ ॥

पीनेवाला—झूंठी वातें फिरे वनाता, ले पी थोड़ी भंग। एक पहर के वाद देखना, कैसा छावे रंग ॥ चलो भंगिया पीयें चलो भंगिया पियें ॥ ९ ॥

विरोधी—लानत इसपर लानत तुझ पर, चल चल होजा दूर। भंग पिये भंगी कहलावे, अरे पातकी क्रूर ॥ मत भंगिया पिये, मत भंगिया पिये ॥ १० ॥

पीनेवाला—(शेर) भंगके अद्भुत मजे को तूने कुछ जाना नहीं। रंग को इसके जरा भी मूढ़ पहिचाना नहीं ॥ आंख में सुरखी का डोरा, मन में मौजों की लहर। शान्ती आनंद इसके विना, कभी पाना नहीं॥११॥
(चलत) साधू संत भंग सव पीते क्या कंगाल अमीर,

ईश्वर से लोलीन करावे, यह इसकी तासीर ॥
चलो भंगिया पियें चलो भंगिया पियें० ॥ ११॥

विरोधी-(शेर) है नहीं यह भंग, क़ातिल अक्ल को तलवार है
करती है यह वेहोश, जानो यह मुरदार है ॥
खौफ जिनको है नरक का, वो इसे छूते नहीं ।
बात सच मानो पियारे, यह नरक का द्वार है ॥

(चलत) यह सब सच्ची बातें भाइयो, भंग नरक डारै ।
आंखें खोल जगत में देखो, लाखों काम विगारै॥

पीनेवाला-सुनकर यह उपदेश तुम्हारा, मुझे हुआ आनंद।
लो मैं छोड़ी भंग आज से, ईश्वर की सौगन्द ॥
मत भंगिया पियो, मत भंगिया पियो० ॥ १२ ॥

विरोधी—भला किया यह काम आपने, दई भंग जो छोड़ ।
और भी सबसे नियम कराओ, कूंडी सोटा तोड़ ॥
मत भंगिया पियो, मत भंगिया पियो० ॥

पीनेवाला—कूंडी तोडूं सोटा तोडूं, भंग सड़क पर डारूं ।
कोई मत पीना भंग भाइयो, वारम्वार पुकारूं ॥
मत भंगिया पियो मत भंगिया पियो० ॥ १३ ॥

———

५७

(हुक्के का ड्रामा)

हुक्केबाज—अहा हाहा क्या अच्छा हुक्का है, है कोई हुक्केका पीने वाला।

(चलत) क्या हुक्का बना ये आला, भर भर पी लो तुम लाला, जो पीवें इसे पिलावें, वे लुत्फ़ज़िंदगी पावें।

विरोधी—बुरी आदत है ये भाई, मत इसकी करो बड़ाई।
दूर दूर हो लानत लानत, क्यों बनता सौदाई॥
यह तनको खूब जलावे, बलग़म को बहुत बढ़ावे।
जो मुंहको इसे लगावे, ना लज़्ज़त कुछ भी पावे॥

हुक्केबाज—जिसको इक चिलम पिलाई, बलग़म की करी सफाई।

विरोधी—दूर दूर हो लानत २ क्यों बनता सौदाई॥

हुक्केबाज—क्या हुक्का बना ये आला, भर भर पीलो तुम लाला, जो पीवें इसे पिलावें, वह अक्लमंद कहलावें॥

विरोधी—जो हुक्के का दम लावें, ले चिलम आगको जावें, सौ सौ गाली फिर खावें, यह मान बड़ाई पावें।

हुक्केबाज—यह कैसी बात बनाई, कुछ कहते शर्म न आई।

विरोधी—दूर दूर हो लानत २ क्यों बनता सौदाई।

हुक्केबाज—क्या खूब बना ये आला, गंगाजल इसमें डाला

पीते हैं अदना आला, यह घट में करे उजाला ।
विरोधी—क्या खाक बना ये आला, दिल जिगर सब करे काला, अच्छा नशा यह निकाला, दोज़ख में गिरानेवाला

हुक्केबाज—यह महफ़िलका सरदार, क्या जाने मूढ़ गंवार ।
विरोधी—(शेर) कब तक कि हुक्का नोशो मुहल्ला जगाओगे, वंसी बजाके नाग को कब तक खिलाओगे ।
मारे आस्तीं डसेगा बस तुम्हें, पंजे से ऐसे देव के बचने न पाओगे । गर ज़िंदगी चाहते हो तो इसको तर्क करो, खुद अपना वरना खिरमनेहस्ती जलाओगे।
(चलत) जिस इससे प्रीत लगाई, आखिर में हुई दुखदाई । मान कहा क्यों पागल बनता कहांगई चतुराई ।
हुक्केबाज—तेरी मान नसीहत छोड़ूं, ले अभी चिलम को तोड़ूं । नहचे को तोड़ मरोड़ूं हुक्केको ज़मींसे फोड़ूं।
ना पिऊं कभी यह हुक्का, लानत २ यह हुक्का,
ना पियो यह हुक्का, बेशक लानत यह हुक्का ॥

५८

(सिगरेट का ड्रामा)

पीनेवाला—यारो मुझे सिगरेट या बीड़ी दिलाना यारो मुझे सिगरेट या बीड़ी दिलाना, बीड़ी दिलाना माचिस लगाना कैसा यह फैशन बना ।

विरोधी—शेम २-छोडो जरा सिगरट का पीना पिलाना, पीना पिलाना दिलको जलाना, नाहक क्यों करते गुनाह। छोडो जरा०।

पीनेवाला—दूर २-है जेब खाली डिबिया भी खाली छुटता नहीं यह नशा।

विरोधी—शेम २-मदिरा पड़ी इसमें लीद भरी है लानत है लानत नशा।

पीनेवाला—दूर २-बातें हैं कैसी दीवानों जैसी, गपशप लगाते हो क्या

विरोधी—शेम २-होवेगी ख्वारी नरकों की त्यारी, हद को तो त्याग जरा।

पीनेवाला—दूर २-पीवो पिलावो ज़रा मुंह को लगाओ, कैसा यह शीरीं अहा!

विरोधी—शेम २-सी० एल० पुकारे जिनदास प्यारे, सोचो तो दिल में ज़रा।

पीनेवाला—बस २-सोचा विचारा दिल में यह धारा, बेशक बुरा है नशा।

विरोधी—शाबास-छोडो ज़रा सिगरेटका पीना पिलाना।

पीनेवाला—सिगरेट तोडूं डिबिया मरोडूं लानत है लानत नशा।

विरोधी—शाबास छोडो ज़रा सिगरेट० ॥

५९

(नशा निषेध)

जो चाहते हो खुशी से जीना, नशा न पीना नशा न पीना
बुरी बला है यह जामे पीना, नशा न पीना नशा न पीना ॥ टेक ॥

शराबो अफयूनो चरसगांजा, है एक से एक कहर मोला,
पुकार कर कह रहा है बंदा, नशा न पीना नशा न पीना० ॥ १ ॥

शराबियों की जो देखी हालत, किसी के कपड़े हैं कैसे लतपत, कोई है कहता बचस्से इब्रत, नशा न पीना नशा न पीना० ॥ २ ॥

कोई वदरों में पड़ रहा है, किसी का मुंह कुत्ता चाटता है, कोई यह चिल्ला के कह रहा है, नशा न पीना नशा न पीना० ॥ ३ ॥

अगर तुम्हारी है चश्मे बीना, न खाना अफयून न भंग पीना। डबोएंगे यह तेरा सफीना, नशा न पीना नशा न पीना० ॥ ४ ॥

६०

(रंडी निषेध ड्रामा)

(रंडी नचानेवाला)-ज़रा रंडी नचा ज़रा रंडी नचा, दौलत

का दुनिया में यह है मज़ा ।

(विरोधी)–मत रंडी नचा मत रंडी नचा, नरकोंमें तुझको यह देगी पौंचा ।

फिजूल करो बरबाद रुपैय्या ज़रा तो सोचो भाई ।
देख देख सन्तान तुम्हारी बिगड़ जाय अन्याई ।
मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ १ ॥

(नचाने०) तालीम सीखने रंडी घर औलाद हमारी जावे,
सभी बात में ताक़ बने फिर कहीं खता ना खावे ॥

(विरोधी) रंडी की खातिर जो देखे सो नारी ललचावे,
मन में उनके उठें उमंगें रंडी फैशन बनावे । मत रंडी नचा मत० ॥ ३ ॥

(नचाने०) समधी के दरवाजे सीठने रंडी आय सुनावे ।
दे जबाव समधन जब उसको बाग बाग होजावे ॥
जरा रंडी नचा० ॥ ४ ॥

(विरोधी) नाच देखने के शौक़ीनो ज़रा सुनो दे कान ।
रुपया तुम्हारेसे क़ुरवानी होवे वेपरमान ॥ मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ ५ ॥

(नचाने०) हम रुपया रंडी को देते ना कुछ कहते भाई ।
गान सुनै सो आनंद पावै खूब शान्ती छाई ॥ जरा रंडी नचा० ॥ ६ ॥

(विरोधी) रातों जगने से महफिल में होते हों बीमार ।
बहुत जगह बुनियाद इसी पर चलते खूब पैंजार ॥
मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ ७ ॥
(नचाने०) महफिलमें रंडीकी शोहरत सुनकर सब आजावें
रौनक बढे, विवाह की भारी रुपया सभी चढ़ावें ।
ज़रा रंडी नचा जरा रंडी नचा० ॥ ८ ॥
(विरोधी) रंडी का सुन नाम सभासे धार्मिकजन उठ जावें
नंगों के बैठे रहने से मजा नहीं कुछ आवे ॥ मत
रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ ६ ॥
(नचाने०) बिन इसके रौनक नहीं आवै सूनी लगें बरात
दिन तो जैसे तैसे बितावें कटै न खाली रात ॥
जरा रंडी नचा जरा रंडी नचा० ॥ १० ॥
(विरोधी) धर्मोपदेशक बुलवा करके, कीजे धर्म प्रचार ।
रंडी भड़वे तुम्हें बनावे करदें खाने खराब ॥ मत
रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ ११ ॥
(नचाने०) नित्य नहीं हम नाच करावें कभी २ करवावें ।
नेग टेहले को साधे है, नहीं खता हम पावें ॥ जरा
रंडी नचा जरा रंडी नचा० ॥ १२ ॥
(वरोधी) एक दफैं का लगा ये चस्का; कर देता है ख्वार ॥
धन दौलत सब खोकर प्यारे, होजायगा बेज़ार ॥
मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ १३ ॥

(नचाने०) सुनी नसीहत तेरी भाई मन में हुआ विचार।
रुपया तवा होके क्या, जाना होगा नर्क मंझार॥
जरा सच्ची बता ज़रा सच्ची बता० ॥ १४ ॥
(विरोधी) सत्य कहूं मैं नर्क पड़ोगे सुनलो रंडी वालो।
कहै ज़वाहर जैनी तुम से कसम धर्म की खालो॥
मत रंडी नचा मत रंडी नचा० ॥ १४ ॥
(नचाने०) सुनकर शिक्षा तेरी भाई कसम धर्म की खाऊं
नाच देखने और करवाने का मैं हलफ़ उठाऊं॥
नहीं रंडी नचाऊँ नहीं रंडी नचाऊँ आज से लो मैं
हलफ़ उठाऊँ ॥ १६ ॥

६१

(वेश्या निषेध)

रंडी बाज़ी में ग़र्क ज़माना हुआ, बड़े अपनों को दाग़
लगाना हुआ ॥ टेक ॥
जिनके धन थे अपार, फंदे इसके पड़े यार, खोया ज़रमाल
सार, हुई इज्जत ख्वार, खाली दौलत का सारा खजाना
हुआ। रंडी बाजी में० ॥ १ ॥
एक पाई का यार, नहीं मिलता उधार, कहे आदम बदकार
मुंह से थूके संसार, फल वेश्याकी प्रीती का पाना हुआ।
रंडीबाजी में ग़र्क जमाना० ॥ २ ॥

गरचे रंडीके यार; गर्भ तेरा रहजाय, कन्या जन्मे जो आय, जग से मैथुन कराय, बेशुमार जमाई बनाना हुआ। रंडी बाजी में० ॥ ३ ॥

यदि गर्मी होजाय, फिरो टहनी हिलाय, कहीं जावो चलाय, देख तुम को घिनाय, कहैं उठजावो; खूब याराना हुआ। रंडी बाजी में० ॥ ४ ॥

जबलों पैसा है पास, रंडी रहती है दास, नहीं पैसा रहा पास, देवे बाहर निकास, घरसे मुवे निकल क्या दिवाना हुवा। रंडी बाजी में० ॥ ५ ॥

जाओ फिर कर जो यार, मारे जूते हजार, दौड़ लावे पुकार, मुश्क बांधै सरकार; पुलिस आगई इजहार लिखाना हुआ। रंडी बाजी में गर्क जमाना हुआ ॥ ६ ॥

फौरन थाने में आन किया तेरा चालान, हुक्म डिप्टी ने तान, दिया ऐसा लो जान, छह की सजा, दस जुर्माना हुआ। रंडी बाजी में० ॥॥ ७ ॥

कहता जैनी ललकार, कर इससे न प्यार, जाओ नरकों मंझार, नहीं हरगिज जिनहार, प्रीति इससे न कर, क्यों दिवाना हुआ। रंडीबाजी में गर्क जमाना हुआ ॥ ८ ॥

६२

(रंडी निषेध)

हया और शर्म तज रंडी सरे महफिल नचाई है, न समझो

इसमें कुछ इज्जत सरासर बेहयाई है ॥ टेक ॥
निगाहे बद से देखें बाप बेटा और भाई सब, कहो यह मा
हुई भावी बहन अथवा लुगाई है। हया और० ॥ १ ॥
दिखा कर नाच और रुपया उनसे दिला कर के, अरे
अन्याइयो बच्चों को क्या शिक्षा दिलाई है। हया० ॥२॥
लखें कोठे झरोखों से तुम्हारे घर की सब नारी, असर
क्या नेक दिलपै पैदा होता भाई है। हया और० ॥ ३ ॥
यह खातिर देख उसकी सब के दिल में आग लगती है,
हैं आपस में यह कहती वाह क्या उमदा कमाई है। हया
और शर्म० ॥ ४ ॥
कभी विछुवे न नथ बाली हमें स्वामी ने बनवाई, मगर
इस बेवफा औरत को दी सारी कमाई है। हया० ॥ ५ ॥
हुई खातिर कभी ऐसी न जैसी इसकी होती है, बनी बेगम
पड़ी दिन रात तोड़े चारपाई है। हया और शर्म० ॥६॥

६३

(वेश्या निषेध)

मत वेश्या से प्रीति लगाओ जी ॥ टेक ॥
लाखो हजारों घर ग़ारत हुए हैं नालिश करादी, कुरकी
फैलादी नीलामों की होय मनादी। हा। मत वेश्या० ॥१॥
लाखों हजारों प्राणी भूखे मरे हैं धनको खोकर, निर्धन

होकर, फिरें भटकते हैं दरदर। हा। मत वेश्या से० ॥२॥
लाखों करोड़ों की जानें गई हैं वीरज खोकर, निर्बल होकर हों बीमार मरें सड़ सड़ कर। हा। मत० ॥ ३ ॥
हजारों गरमी से सड़ रहे हैं नीम की टहनी पड़ेगी लेनी, होय मुसीबत भारी सहनी, हा मत वेश्या से प्रीति० ॥४॥
लाखों प्रमेह रोग भुगत रहे हैं, तेल खटाई मिरच मिठाई, खावें तो कमबख्ती आई। हा। मत वेश्या से ॥ ५ ॥
होवे जो रंडी के पुत्री तुम्हारी, करती कमाई दुनिया से भाई गिनो तो कितने भये जमाई। हा। मत वेश्या०॥ ६॥
कहता जैनी अब कुछ चेतो, माल बचाओ इज्जत कमाओ, भूल कभी वेश्या के न जाओ। हा। मत वेश्या से प्रीति लगाओ जी ॥ ७ ॥

६४

(एक बूढे के दिल में शादी की उमंग) गद्य

भाई बूढो! मेरी बडी उमर के दोस्तो! कुछ तुम्हें अपनी भी खबर है, न तो तुम्हारे घर है न दर है। भाई तुमको कुछ ख्याल हो या न हो लेकिन मैं अपनी क्या कहूं, जब से घर की औरत का साथ छूटा तब से मेरा तो बिलकुल ही भाग फूटा है। उसके मरने के बाद न कुछ खाना है न पीना है। न मरना है न जीना है। क्या

फंहू जब मैं अपने बेटों और पोतों की जोरूओं के बिछुओं की झंकार सुनता हूं तब हाथ मलता हूं और सिर को धुनता हूं। न दिन को चैन है और न रात को आराम है। सच पूछो तो बिला जोरू के यह जिंदगी हराम है। भाइयो! जिंदगी के दिन तो बुरी भली तरह से गुजर ही जायेंगे और मरने को वह क्या मरी हम भी एक न एक दिन मर ही जायंगे लेकिन सब से ज्यादा फिकर तो यह है कि बाद मरनेके चूड़ियां कौन तोड़ेगी, करवा कौन फोड़ेगी बिछुवे कौन उतारेगी, चूनड़ी कौन फाड़ेगी। हाय! जब इस बात का ख्याल आता है तो छाती पर को सांप सा चला जाता है। भाइयो! मत सुनो इन नौजवानोंकी, मत सुनो इन आलिम और विद्वानों की। यह तो अपने मतलब की कहते हैं, खुद मजे में रहते हैं। इनको हमलोगों की क्या खबर है। मुरदा बहिश्त में जाय या दोजख में। इनको तो अपने दाल मांडे से काम है।

बस बस, आओ! भाइयो शादी करावें। कोई सात आठ बर्ष की नन्ही सी दुल्हन ब्याह कर लावें। लेकिन ख्याल रखना अगर कोई बड़ी दुल्हन आवेगी तो वह कमबख्त हमको ही नोंच नोंच कर खाजावेगी। इस लिये खूब सोच समझ कर काम करना चाहिये मेरी तो यह राय है कि बिला जोरू के रंडवेपन की हालत में हरगिज न मरना

चाहिये वाह ! वाह ! वाह ! आहा ! आहा ! भाई खूब मैं तो जरूर ही शादी कराऊंगा । (बूढे का गाना)

बूढ़ा—मैं तो शादी करूं मैं तो शादी करूं, शादी से खाना आबादी करूं ॥ टेक ॥

नई नवीली छैलछबीली इक जोरू व्याह लाऊं,
बूढा होकर दुल्हा कहाऊं, सरपर मौड़ धराऊं ।
मैं तो शादी करूं ॥ १ ॥

रिफार्मर—मत शादी करे, मत शादी करे, भारत की क्यों बरबादी करे ॥ टेक ॥

साठ वरस का बूढा खूसट, मुंह में रहा न दांत ।
गड़ गड़ हाले गर्दन तेरी, थर थर कांपे गात ।
मत शादी करे मत शादी करे ॥ भारत० ॥ २ ॥
चेहरा तेरा है मुर्झाया, पोले पड़ गये गाल ।
बातें करते हुए टपकती मुंह से टप टप राल ॥
मत शादी करे मत शादी० ॥ ३ ॥

बूढा—हाथ पैर से हूं मैं चंगा, बदन गठीला मेरा ।
जो इक थप्पड़ कसकर मारूं तो मुंह फिरजावे तेरा ॥
मैं तो शादी करूं० ॥ ४ ॥

रिफार्मर—बस बस रहो बढो मत आगे, बड़े न बोलो बोल । आंखों के अन्धे हो, फिर भी देखो आंखें खोल ॥ मत शादी करो मत शादी० ॥ ५ ॥

बूढा—देख मेरा आंखों का सुरमा, कैसा लगे पियारा।
हाथों कंगन पहन लगूं मैं, जैसे राज दुलारा॥
मैं तो शादी करूं॥ ६॥

रिफार्मर—बेटे पोते अर पड़पोते, कुटुंब तेरे घर बारी।
तुझे लगी शादी की, बिलकुल गई तेरी मत मारी॥
मत शादी०॥ ७॥

बूढा—बेटे पोते अपने घर के, मेरा तो घर खाली।
घर की लाली जभी रहे जब हो घर में घरवाली॥
मैं तो शादी करूं मैं तो शादी०॥ ८॥

रिफार्मर—घर वाली क्या तेरी जानको रोवेगी नादान।
आज कराता है तू शादी, कल चढ़ चले विमान॥
मत शादी करे मत शादी०॥ ९॥

शेर

बैठ कर अरथी पै तू, कल जायगा स्मशान में।
करके जायगा दुल्हन को, रांड तू इक आन में॥
क्या भरोसा ज़िंदगी का और फिर बूढा है तू।
पैर तेरे गोर में, और हाथ कबरिस्तान में॥
क्यों करे ज़ालिम किसी की ज़िंदगी बरबाद तू।
क्या धरा अब ब्याह में और ब्याह के अरमान में॥
गर तू जीती चाहता है आक़बत में हो भला।
मन लगा भगवान में और धन लगा पुन्य दान में॥

(चलत)

मत कर शादी, घर बरबादी, तुझे सलाहदी सुखकारी।
सोच समझ कर देख ज़रा तू इसमें निकलेगी ख्वारी॥
बूढा—कुछ परवा की बात नहीं जो हूं कल रथी सवार।
करवा फोड़े चुड़ियां तोड़े नई नवीली नार॥
मैं तो शादी० ॥ १० ॥

(शेर)

क्या भला यह कम नफा है जो हो घरमें स्त्री।
तोड़े चुड़ियां फोड़े करवा सर की फाड़े चुनरी॥
और घर के सब करेंगे शोक लोकालाज को।
पर वह सच्चे दिल से मेरा शोक माने गम भरी॥
एक तो वैसे मरना है बुरा संसार में।
और फिर रंडवे का मरना बात है कितनी बुरी॥
यह समझ कर मैंने इरादा ब्याह करने का किया।
अब नहीं मानूंगा ज्योती इसी में है बेहतरी॥

(चलत)

होवे शादी घर आबादी, मनकी मुरादी बर आवे।
हट्टा कट्टा हूं मैं पट्ठा, तू क्यों रोड़ा अटकावे॥
रिफार्मर—मैं कहता हूं तेरे भले की समझ २ नादान।
बन्ना बने मत ब्याह करे मत, बात मेरी ले मान॥
मत शादी० ॥ ११ ॥

बूढा—नहीं भले की बात कही तैं बुरे की सारी ।
जा घर अपने बैठ छोकरे अकल गई तेरी मारी ॥
मैं तो शादी० ॥ १२ ॥
हाय हाय बूढों के ब्याह ने किया देश का नाश ।
तीस लाख भारत की विधवा भोग रही हैं त्रास ॥
मत शादी करे मत शादी करे ॥ १३ ॥
बूढा—फिर क्या भारत की रांडों का मैं हूं जिम्मेदार ।
उन कमबख्तों के सिर आकर पड़ी कर्म की मार ॥
मैं तो शादी करूं० ॥ १४ ॥
रिफार्मर—नहीं कर्म की मार पड़ी है तुझ जैसों ने कीना
खुशी खुशी से शादी करके महापाप सिर लीना ॥
मत शादी करे मत शादी० ॥ १५ ॥
बूढा—बात कही तैं सच्ची प्यारे आंख खुली अब मेरी ।
मैं नहीं हरगिज़ ब्याह करूंगा, सुनी नसीहत तेरी ॥
नहीं शादी करूं नहीं शादी करूं आज से लो मैं
नियम करूं, नहीं शादी करूं नहीं शादी करूं ॥

(बूढे के ब्याह का ड्रामा)

बुड्ढा छोटीसी छोकरीको ब्याह लिये जाय । शेम शेम ॥ टेक
गोदी खिलायगा, बेटी बनायगा । नन्हीसी बाला को ब्याह
लिये जाय, बूढा छोटीसी छोकरी० ॥ शेम शेम ॥ २ ॥

हिये का फूटा, दांतों का टूटा । बोकेसे मुंह का यह ब्याह लिये जाय ॥ बूढा छोटी० ॥ शेम शेम ॥ २ ॥

डाढी मुंडाई, मूछें कटाई । चहरे पै उबटन मलाय लिये जाय । बूढा छोटी० ॥ शेम० शेम० ॥ ३ ॥

सिर को रंगाया, सुरमा लगाया । मुखपै तो पौडर लगाय लिये जाय । बूढा छोटी० ॥ शेम शेम० ॥ ४ ॥

गर्दन है हिलती, आंखें हैं मिलती, हाथों में कंगना बंधाय लिये जाय । बूढा छोटी० । शेम शेम० ॥ ५ ॥

मिस्सी लगाई, महंदी रचाई । सिर पै तो सेहरा बंधाय लिये जाय । बुड्ढा० ॥ शेम शेम ॥ ६ ॥

पोती सी दुल्हन, बाबा सा दुल्हा । रोती रोती छोकरी उडाय लिये जाय । बुड्ढा० ॥ शेम शेम० ॥ ७ ॥

ग्यारह की बन्नी, अस्सी का बन्ना । रुपयों की थैली झुकाय लिये जाय । बुड्ढा छोटी० ॥ शेम शेम ॥ ८ ॥

देखो यह बूढा बुद्धि का कूढा, करनेको विधवा ये ब्याह लिये जाय । बुड्ढा छोटी सी० ॥ शेम शेम ॥ ९ ॥

६५

(चोरी का ड्रामा)

(चोर) चलो चोरी करें चलो चोरी करें, जाकर किसीका धन हम हरैं ॥ टेक ॥

चोरी करने वाले यारो मन माना धन पाते, मजे करें हैं अपने घर में बैठे ऐश उडाते । चलो चोरी० ॥१

(विरोधी) मत चोरी करो मत चोरी करो, नाहक किसी का धन क्यों हरो ॥ टेक ॥

इस दुनियां में धन है भाइयो, प्राणों से भी प्यारा। जो कोई चोरी करके लावे वो होवे हत्यारा ॥ मत चोरी करो मत० ॥ २ ॥

(चोर) चोरी करने वाला यारो कभी न हो कंगाल। सारा कुनबा ऐश उडावे मिलै मुफ़्त का माल ॥ चलो चोरी० ॥ ३ ॥

(विरोधी) चोर उचक्के डाकू का, कोई न करे इतबार । घर बाहर नहीं इज्जत पावे, बुरा कहे संसार ॥ मत चोरी० ॥ ४ ॥

(चोर) चोर उचक्के डाकू जगमें, जवांमर्द कहलाते । नाम हमारा सुनके भाई, सभी लोग थर्राते ॥ चलो चोरी० ॥ ५ ॥

(विरोधी) बुरा काम चोरी है भाइयो, मतलो इसका नाम। पड़ै जेलखाने में जाकर, नाहक हों बदनाम ॥ मत चोरी करो मत चोरी करो० ॥ ६ ॥

(चोर) चोरी करने वाले यारो, जरा फिक्र नहीं करते । चाहे कैद होजांय वहां भी, पेट मजे से भरते ॥

चलो चोरी करें चलो चोरी करें । ७ ॥

(विरोधी) क्या करता तारीफ कैद की, सुनकर दिल थर्रावे
चक्की पीसे बुने बोरिये, मार रात दिन खावे ॥
मत चोरी करो मत चोरी करो० ॥ ८ ॥

(चोर) जो असली हैं चोर, कैद में नहीं मार वो खाते ।
करके काम मजे से सारा, मुफ्त रोटियां खाते ॥
चलो चोरी करें चलो चोरी करें ॥ ९ ॥

(विरोधी) नहीं चैन दिन रात कैद में, भरते रहैं तवाई ।
महा कष्ट से प्राण छोड़कर सहैं नरक दुख भाई ॥
मत चोरी करो मत चोरी करो० ॥ १० ॥

(चोर) नरकों के कुछ दुखका भाइयो, मतना करो विचार ।
देखे भाले नहीं किसी ने, योंही कहै संसार ॥
चलो चोरी करें० ॥ ११ ॥

(विरोधी) शेर

नरकों के दुख की कुछ तुम्हैं यारो खबर नहीं ।
दूसरों का धन हरो हो, फिर भी मनमें डर नहीं ॥
मारैं छेदैं चीर फारैं नर्क गति में नारकी ।
याद रक्खो चोर का इसके सिवा कोई घर नहीं ॥
गर तुम्हैं मंजूर होवे बहतरी अपनी सदा ।
मत हरो धन और का इसका समर अच्छा नहीं ॥

(चलत) जो चोरी से नहीं डरते वो दुख नरकों का भरते,

ज्ञान कहा मूरख अज्ञानी चोरी कभी न करना।
(चोरी) अब मेरी समझमें आई, बेशक है बहुत बुराई,
त्याग किया चोरीका मैंने आजसे मैंतो नियम करूं॥

६६

(हिन्दी भाषा की प्रशंसा)

सकल भाषाओं में रे उत्तम देवनागरी भाष ॥ टेक ॥
देवनागरी है वो भाषा, जो लिक्खो सो पढ़लो।
और किसी में सिफत नहीं है चाहे परीक्षा करलो ॥
सकल भाषाओं में रे देव० ॥ १ ॥
अक्षर केवल चार नागरी शब्द बना हरिद्वार।
सात हरफ उरदू के मिल कर बनता हरी दिवार ॥
सकल भाषाओं में रे उत्तम० ॥ २ ॥
एच. ए. आर. डी. डब्ल्यू. ए. आर. (HARDWAR)
अंग्रेजी में यार, इतनी दूर में लिखा जावे फिरभी हरी
डुआर ॥ सकल भाषाओं में रे० ॥ ३ ॥
किसी ने उर्दू में खत लिखकर मंगवाये थे आलू।
पढ़ने वाले ने क्या भेजा इक पिंजरे में उल्लू ॥
सकल भाषा० ॥ ४ ॥
शुड (SHOULD) में एल लिखा जाता है पढने में नही आवे
कौन खता के बगैर मतलब बिरथा पकड़ा जावे ॥
सकल भाषा० ॥ ५ ॥

सुन्दर नाम नागरी लिक्खो प्रियवर मोतीदत्त। अंग्रेजी में लिक्खा जावे डीयर मोटीडट्ट॥ सकल भाषाओं० ॥ ६ ॥

इंगलिश के स्पेलिंग देखकर क्यों ना हांसी आवे। बी यू टी तो बट हो किन्तु पी यू टी पुट होजावे॥ सकल भाषाओं में रे० ॥ ७॥

मुद्दत से यह संस्कृत भाषा मुरदा हुई थी सारी।
पुनः जीवित कर गये इसको अकलंकदेव निस्तारी॥
सकल भाषाओं में रे० ॥ ८ ॥

६७

(ड्रामा बाल विवाह)

कर्ता—मेरे भाई का ब्याह मेरे भाई का ब्याह, चलकर
खुशी मनाऊंगा आज, मेरे भाई का ब्याह ॥ टेक ॥
(दोहा) मामी मौसी मिल सभी, करत सुमंगल गान
गीत नृत्य के रंग में, सब घर है इक तान ॥
मेरे भाई० ॥

विरोधी—मुख तेरा खुश दीखता, अरु प्रमुदित सब गात।
भ्रात बता दे क्या हुई, आज खुशी की बात॥
तेरे भाई का ब्याह तेरे भाई का ब्याह चलकर खुशी
मनायेगा आह ॥ २ ॥

कर्ता—हां भ्राता जी सत्य है, आनंद कारण आज।
मेरे प्यारे भ्रातका, हुआ ब्याहका साज ॥ मेरे०॥३

विरोधी—बुरी भारत की राह बुरी भारत की राह, मत
कर छोटे से भाई का ब्याह बुरी भारत की राह० ॥
(दोहा) क्या कहते हो भ्रातजी, भाई अति ही बाल,
आठ वर्ष की उमर में, क्या ब्याहन का काल ॥
बुरी भारत की राह० ॥ ४ ॥

कर्ता—क्यों होगा आनंद नहीं, भाई का है ब्याह ।
बात खुशी की है बड़ी, सबको होगी चाह ॥
मेरे भाई का ब्याह० ॥ ५ ॥

विरोधी—धूम मचाई अटपटी, खुशी मनाई भूर ।
तुम सब कुछ नहीं समझते, गलती है भरपूर ॥
बुरी भारत की राह० ॥ ६ ॥

कर्ता—मेरी भावज को अभी, लगा बारहवां वर्ष ।
जोड़ी अच्छी देखके, सबने माना हर्ष ॥
मेरे भाई० ॥ ७ ॥

विरोधी—भावज भाई से बड़ी, लगा बारहवां वर्ष ।
लानत ऐसे ब्याह पर, क्यों माना है हर्ष ॥
बुरी भारत की० ॥ ८ ॥

कर्ता—लड़की भी है वो बड़ी, रक्खें कैसे लोग ।
पढ़ने से क्या होयगा, कहते हैं सब लोग ॥
मेरे भाई का ब्याह० ॥ ९ ॥

विरोधी—अरे अरे अफसोस है, दुख भरा संसार ।
जिस्में रोने आदि की, शिक्षा का प्रचार ॥
बुरी भारत की० ॥ १० ॥
कर्ता—पढ़ने से क्या होयगा, करना क्या व्यापार ।
इतना ही बस बहुत है, करना शिष्टाचार ॥
मेरे भाई का० ॥ ११ ॥
विरोधी—भ्राता लड़की एक है, देवी अति ही बाल ।
छोटे पन में लेगया, उसके पति को काल ॥
बुरी भारत० ॥ १२ ॥
कर्ता—बड़े भाग के योगतें, आवे यह संयोग ।
लाड़ लड़ाकर बहू का, धनका हो उपयोग ॥
मेरे भाई० ॥ १३ ॥
विरोधी—नहीं बुद्धि विद्या कछू, नहीं जाने कुछ राह ।
पढ़ता पहिली क्लास में, क्या जाने वह ब्याह ॥
बुरी भारत० ॥ १४ ॥
कर्ता—नाई ब्राह्मण मिल सभी, घर पर आये आज ।
खुशी मनाते हैं सभी, सुनकर साज समाज ॥
मेरे भाई० ॥ १५ ॥
विरोधी—पढ़ी लिखी भी है नहीं, जाने न कुछ भी राह ।
जल्दी इतनी क्यों करी, पीछे होता ब्याह ।
बुरी भारत० ॥ १६ ॥

कर्ता—माता उसकी अनपढ़ी, करें कौन जब गौर।
रोना धोना आगया, अब क्या करना और॥
मेरे भाई० ॥ १७॥
विरोधी—स्वार्थ बुद्धि हैं ये पिता, माता उनकी क्रूर।
जिससे भाई होगये, धन के नशे में चूर॥
बुरी भारत० ॥ १८॥
बहुत कहूं क्या मेरे भाई, बाल विवाह अनीत।
यह कुरीत निखार कर, फैलाओ जग कीर्ति॥
बुरी भारत की राह० ॥ १९॥
कर्ता—भाई बात यह सत्य है, हम सब धरें जु ध्यान।
तो होजावे जल्द ही, भारत का उत्थान॥
बुरी भारत की राह० ॥ २०॥
भगवत से हम प्रार्थना, करते हैं धरि ध्यान।
भारत की सुख शान्त का, हो जावे उत्थान॥
बुरी भारत की० ॥ २१॥

६८

(भजन उपदेशी)

फिरे अरसे से होता तू ख्वार दिला, देखा तुझसा तो मैंने बशर ही नहीं। जिसे नादां तू समझे है अपना मकां, यह तू करले यक़ीं तेरा घरही नहीं॥ टेक॥ जैसे

गैर की लेकर कोई ज़मीं बना झोपड़ी अपनी को लेवे सजा, जब मालिक आनके करदे जुदा चलै उस दम कोई उज़र ही नहीं ॥ फिरे अरसे से० ॥ १ ॥ पी मोह शराब खराब हुआ, पड़ा गाफिल खोकर होश को तू, बड़ा बेडर होके बैठ रहा, यहां के तो बराबर डर ही नहीं ॥ फिरे अरसे०॥२॥ कहै मेरा मेरा सब माल व ज़र, परवार मेरा अरु बाग़ो चमन । तेरा यार नहीं परवार नहीं, तेरा माल नहीं तेरा ज़रही नहीं ॥ फिरे अरसे से० ॥ ३ ॥ करै ग़ैर की चीज़ पै दावा दिला, अरु चीज को अपनी तू भूल गया । तू ने जुल्म पै बांधी है कस के कमर, इन्साफ पै तेरी नज़र ही नहीं ॥ फिरे अरसे० ॥ ४ ॥ तू तो जाल में दुनियां के ऐसा फंसा, तुझे आगे का ख्याल ज़रा भी नहीं । तुझे अपने वतन का न सोंच दिला, तुझे अपने तो घर का फिकर ही नहीं ॥ फिरे अरसे से० ॥ ५ ॥ चलो जोतीस्वरूप वतन को दिला, परदेश से दिल को अपने हटा । कर हिम्मत कस कर बांधो कमर, फिर हटके जो आओ इधर ही नहीं ॥ फिरे अरसे से० ॥ ६ ॥

६६

(चार मत खंडन)

भज अरहन्तं भज अरहन्तं भज अरहन्तं भय हरणं॥ टेक॥

ब्रह्मा कहावइ तप्तन वावइ चावइ इन्द्र सुपद लेवा, मृगछाला चाम जु आला फेरइ माला कर सेवा। तब इन्द्र पठाई देवी आई जाई पासइ नृत्य ठयो, तब इच्छा जागी भयो सरागी त्यागी पदते भृष्ट भयो, निज आव गमाई लोग हंसाई सो क्यों नहिं टारयो निज मरणं॥ भज अरहन्तं० ॥ १ ॥

कृष्ण मुरारी गऊ आचारी दे दे तारी हरखायो, गूजर की लड़की सिर मटकी झटकी पटकी दधि खायो। जोरं जोरी बांह मरोरी गागर फोरी जल ढोरी, घर घर डोले मुख ना बोले आँखें छिप माखन चोरै। भगत उबारै राक्षस मारै सो किम हो तारन तरनं॥ भज अर० ॥२॥

पी भांग धतूरा अमली पूरा सांप गुहेरा कंठ धरै, चढ़ि पशु असवारी साथ में नारी प्यारी प्यारी भजन करैं, गौरा संग राचै गावै नाचै सांचे मन सेवा सारै, नर सिर माला धरै विशाला शक्ति कपाला कर धारै। भोगी होय कहावे जोगी सो किस विध हो तारन तरनम्॥ भज अरहन्तं भज अरहन्तं० ॥ ३ ॥

मच्छी मासं करइ ग्रासं छिन छिन नासं जगत कहै, ये वचनविलासा झूठो भाषा भगत विलासा किम लहियं, करम कमावई कियो न पावई यों समझावै बोध मती, साध कहावइ क्या फल पावै इह मन भावै ए करती,

मिथ्या बानी कहै अज्ञानी ताको कौन करै वर्णन् ॥ भज अरहन्तं भज अर० ॥ ४ ॥

वहु सुरगतें आवइ उदर समावइ पावइ छत्रीकुल नीके सुर इन्दर आवैं नगर रचावैं सब गुण गावैं प्रभु जी के, होय विरागी माया त्यागी जागी अगनी ज्ञानमयी, सब कर्म्म नसावइ केवल पावई वेद बतावइ ईश थई, षट भूषण अष्टादश दूषण नाही जिस्में सो शरणं ॥ भज अ० ॥५॥

पांच भेवको देव जगत में सेव करीजे परख करी, अनन्तकाल का जगतजालमें उलझ रहा नही गरज सरी, लख चौरासी की गल फांसी कीया पासी जहां जासी, देखि विमासी तजके हांसी निज घर आसी सुख पासी, बारंबारा करो विचारा ईश्वर शुद्ध हिये धरणं ॥ भज अरहन्तं० ॥ ६ ॥

ज्ञान कमाया मोल विकाया रीस रिसाया भेष धरे, काम मरोरे माया जोरे व्याज बहोरे तोप हरे । गुरु विन अज्ञानी चेला मानी मानी की दुरगति न्यारी, डोरी गावइ जग परचावई माल उड़ावइ छै भारी, धर्म्म न धरही उलटा लरहि डरै नही परवपु हरणं ॥ भज अर० ॥७॥

पांच भेवको देव जगत में सेव करीजे परख करी, असन्तकाल का जगतजाल में उलझर रहा नहीं गरज सरी, लख चौरासी की गल फांसी किया पासी जहां जासी,

देखि विमासी तजके हांसी निज घर आमी सुख पासी, बारंबारा करो विचारा ईश्वर शुद्ध हिये धरणं । भज अरहन्तं भज अरहन्तं० ॥ ८ ॥

सुमति जागी भयो विरागी घर बनवास वसै, ज्ञान अभ्यासी परम उदासी सिंधासी पिखानाहि नसै, आठ बीस गुण धरै मुनी सुर इम रीस रहित थिरता ठानै, चाले मन माने वसन विगाने आय आय पर पर जाने, छह मुनिराज विराजत जहां जहां तहां मुझ धोक हुओ चरणं ॥ भज अरिहन्तं भज अरिहन्तं० ॥ ६ ॥

मतचार अनारज कीने खारज आचारज अकलंक मुनी, जिस डंक बजायो सभा सुनायो मैं गुनगायो ग्रंथ सुनी । तजो कुदेवा भजो सुदेवा कुगुरु सुगुरु को भेव लहो, परजग सारा को न तम्हारा क्यों पापी की पक्ष गहो, जैतराम कहैं इष्ट नाम जप काटौ कर्म्म जु आवरनं ॥ भज अरहन्तं० ॥ १० ॥

सम्मत उनीसै साल इकीसै दीसै दीसे मत गाये, धर्म्मी न रीसई पापी रीसई खीसई पापी जाडयन भाये । ऐसी खासा चोर उजासा पूरै न आसा नहीं लोगो, मैं वलिहारी देव तिहारी भारी कर्म्म हणो मोरे । सुख संसार क्षार को लेपन चाहूं भव दधि उद्धरनं ॥ भज अरहन्तं० ॥ ११ ॥

७०

(भजन उपदेशी)

नहीं कुछ हम किसीके हैं, हमारा को न प्यारा है ।।टेक।।
सुता सुत बहन परवारा, पिता माता हितू दारा ।
ये तन सम्बन्ध कुटुम्ब न्यारा हमारा क्या हमारा है ।।
नहीं कुछ० ।। १ ।। सराये सम जगत पाता, कोई आता
कोई जाता । मुसाफर से कहा नाता, कोई दमका
गुजारा है ।। नहीं कुछ० ।। २ ।। विषय सुख पुन्य की
माया, घोर दुख पाप से पाया । ये सुख दुख कर्म्म की
छाया, अलग चेतन बिचारा है ।। नहीं कुछ० ।। ३ ।।
मिटा भ्रम नंद उद्योती, तेरे घटमें परम जोती । सकल जग
रीत लखि थोथी, किया सबसे किनारा है । नहीं कुछ।।४।।

७१

(वीनती पार्श्वनाथ)

पारस पुकार मेरी, सुनिये करीं क्या देरी ।। टेक ।।
भ्रमियों मैं लक्षचौरासी, धर धरके देहनाशी । जन्मा फिर
मरन ताईं, अति घोर दुख लहाई ।। पारस पुकार०।।१।।
पाया में कष्ट भारी, वरनों मैं तुम अगारी । तुम हो जगत
के स्वामी, बाधा हरन को नामी ।। पारस पुकार०।।२।।

अंजन से चोर तारे, श्रीपाल उदधि उवारे। जल ते उरग बचाये, धरनेन्द्र पद ते पाये ॥ पारस पुकार० ॥ ३ ॥
संकट पड़ा सिया को, अगनी से जल किया जो। मुनि मान तुंगराई, बंधन तुरत छुड़ाई ॥ पारस पुकार० ॥ ४ ॥
सीझे अनेक जीवा, सुमिरन अरहन्त देवा। तारक है नाम थांरा, तो क्या गुनाह हमारा ॥ पारस पुकार० ॥ ५ ॥
भविजन शरण तुम्हीं हो, कर्मन हरन तुम्हीं हो। वारन तरन तुम्हीं हो, शिव सुखकरन तुम्हीं हो ॥पारस०॥ ६ ॥
देखे कुदेव सबते, फिरते जगत को ठगते। क्रोधी कोई तुम्यारे, विषयी कोई शिकारे। तुमही अदोष पाये, कहां लो तुमरे गुन गांऊं महिमा कहो तुम्हारी, कीजे दया हजारी ॥ पारस पुकार० ॥ ७ ॥

७२

(भजन फूट के विषय में)

इस फूट ने बिगाड़ा हिन्दोस्तां हमारा, सब खाक में मिलाया ये बोस्तां हमारा ॥ टेक ॥
हर कौम ने चखा है, इस फल के जायके को। इस से बचा न कोई, पीरो जवां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ १ ॥
इतनी करी तरक्की, इस तख्त ने यहां पर। खाली रहा न कोई कोनो मकां हमारा ॥ इस फूट के० ॥ २ ॥

अब भूखों मर रहे हैं, दाना नहीं मुयस्सर । इक दिन कि देश था ये, गौहर फिसां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ३ ॥
सातों विलायतों में, मशहूर होरहे थे । अब कौन जानता है नामो निशानं हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ४ ॥
इल्मो हुनर में यक्ता, यह देश हो रहा था । चरचा था जा वजा ये, हर दो जुवां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ५ ॥
अब पास क्या रहा है, हुए हैं तीन तेरह । वो लद गया खजाना, वो कारवां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ६ ॥
भूलेंगे याद तेरी, हरगिज न फूट दिलसे । बरबाद कर दिया है, सब खानुमां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥७॥
पन्ना तू बक रहा है, जाने जुनू में क्या क्या । आसान सब करेगा, वो महरवां हमारा ॥ इस फूट ने० ॥ ८ ॥

७३

(संसार की अनित्यता)

जरा तो सोच अय गाफिल, कि दमका क्या ठिकाना है ।
निकल तन से गया चेतन, तो सब अपना बिगाना है ॥टेक॥
मुसाफिर तू है और दुनियां, सराय है भूल मत गाफिल ।
सफर परलोक को आखिर, तुझे परदेश जाना है ॥
जरा तो सोच० ॥ १ ॥ लगाता है अबस दौलत पै, क्यों तू दिल को अब नाहक । न जावे संग कुछ हरगिज,

यहीं सब छोड़ जाना है ॥ जरा तो सोच० ॥ २ ॥
न भाई वंधु है कोई, न कोई आशना अपना ।
बखूबी गौर कर देखा, तो मतलब का जमाना है ॥
जरा तो सोच० ॥ ३ ॥
रहो निस याद में प्रभुकी, अगर अपनी शफा चाहो ।
अबस दुनियां के धंधों से, हुआ क्यों तू दिवाना है ॥
जरा तो सोच० ॥ ४ ॥

७४

(भजन वैरागी)

काल अचानक ले जायगा, गाफिल होकर रहना क्यारे ॥टेक॥
छिनहू तोकूं नाहि बचावे, तो सुभटन का रखना क्यारे ।
काल अचानक० ॥ १ ॥ रंच संवाद करन के काजे,
नरकन में दुख भरना क्यारे ॥ कुलजन पथिकन के हित
काजे, जगत जालमें पड़ना क्यारे । काल अचानक० ॥२॥
इन्द्रादि कोऊ नाहि बचावे, और लोकका शरना क्यारे ।
निश्चय हुआ जगत में मरना, कष्ट परे तो डरना क्यारे॥
काल अचानक० ॥ ३ ॥ अपना ध्यान करता खिरजावे,
तो करमन का हरना क्यारे । अब हित कर आलस तज बुध
जन, जन्म जन्म में जरना क्यारे॥ काल अचानक० ॥४॥

७५

(मारवाड़ी पञ्चायत का उपदेशक को जवाब)

फुरसत नहीं म्हनें ले हम एकरी, थे रस्ते लागो ॥ टेक ॥
थाका सिरसा ज्ञान सुणावा, अठै मोकला आवे । म्हाने नहीं फुरसत मरने को, आकर पाछे जावो जी ॥ थें रस्ते० ॥ १ ॥ म्हाने नहीं सुहावे थांकी वातां तुसज्यो रीती, किन बातांका करो सुधारा म्हें नही करां अनीती ॥ जी थे रस्ते लागो० ॥२॥ खाली वैठा थां लोगो ने निवरी वातां सूझे, जगह २ थे फिरो रवड़ता, पण महीं कोई पूछे ॥ जी थे रस्ते लागो० ॥ ३ ॥ हुआ अनोखा मंडल वाला, नई चलावे चालां । म्हें नहीं त्यागी रीत वड़ांकी, चाल पुरानी चालां ॥ जी थे रस्ते लागो० ॥ ४ ॥ रुको थारो बांच लियो है, थे पाछे लेजावो । फेर अठै आवन के ताईं मत तकलीफ उठावो ॥ जी थे रस्ते लागो० ॥ ५ ॥

७६

(भजन उपदेशी)

प्यारो ज़रा विचारो, कहता जमाना क्या है ।
गफलत की नींद त्यागो, देखो जमाना क्या है ॥ टेक ॥
विद्या की धूम छाई, चहुं ओर मेरे भाई । विद्या विना तुम्हारा, जीना जिलाना क्या है ॥ प्यारे जरा विचारो० ॥ १ ॥

काले गंवार तुमको, विद्या विना वताते । डूवी तुम्हारी इज्जत, तुमको ठिकाना क्या है ॥ प्यारो जरा० ॥ २ ॥ सन्तान किसकी तुमहो, पुरखा तुम्हारे कैसे । इतिहास कह रहा है, मेरा वताना क्या है ॥ प्यारे जरा० ॥ ३ ॥ शिक्षा अगर न दोगे, मूरख यों ही रहोगे । संतान होगी दुखिया, मेरा जताना क्या है ॥ प्यारे० ॥ ४ ॥ विद्या के जो हितेच्छू उनके वनो सहाई । नुक्तों में द्रव्य प्यारो, विरथा लगाना क्या है ॥ प्यारो जरा विचारो० ॥ ५ ॥ उठके कमर कसो अव, विद्या का चौक वांधो, भारत चमन खिले तव । सोना सुलाना क्या है ॥ प्यारे जरा विचारो० ॥ ६ ॥

७७

(भजन उपदेशी)

उठाके आंख अव देखो, ज़माना कैसा आया है । संभालो देशकी हालत, अंधेरा कैसा छाया है ॥ टेक ॥ मेरे प्यारो अव विचारो, अव दरिद्री होगया भारत । गई विद्या कला कौशल, धर्म भी सव भुलाया है ॥ उठाके आंख० ॥ १ ॥ ज़माना एक था यहां पर, मिले था अन्न भरका । तुम्हीं देखो अकालों ने, हमें आ आ सताया है ॥ उठाके० ॥ २ ॥ शरीरों से गई ताकत, परिश्रम है नहीं हममें । गई हिम्मत की सव वातें, पड़ा रहना सुहाया है ॥

उठा के० ॥ ३ ॥ कहूं कबतक विपत कहानी, मेरे प्यारे तुम्हीं देखो। जगादो जोती विद्या की भला इसमें समाया है ॥ उठाके० ॥ ४ ॥

७८

(भजन उपदेशी)

दुनिया में देखो सैंकड़ों आये चले गये, सब अपनी करामात दिखाये चले गये ॥ टेक ॥

अर्जुन रहा न भीम, न रावन महावली। इस काल बली से सभी हारे चले गये ॥ दुनिया में० ॥ १ ॥

क्या निर्धनो गुणवन्त व मूर्खो धनवन्त। सब अन्त समय हाथ पसारे चले गये ॥ दुनिया में देखो० ॥ २ ॥

सब जन्त्र मन्त्र रह गये कोई बचा नहीं। इक वह बचे जो कर्म को मारे चले गये ॥ दुनिया में देखो० ॥ ३ ॥

सम्यक्त धार न्यामत, नहीं दिलमें समझले। पछतायगा जो प्राण तुम्हारे चले गये ॥ दुनिया में देखो० ॥ ४ ॥

७६

(विनती पं० भूधरदास कृत)

पुलकन्त नयन चकोर पक्षी हसत उर इन्दीवरो, दुर्बुद्धी चकवी विछुर विलखे निबड़ मिथ्यातम हरो। आनन्द अम्बुज उमंगि उछरयो अखिल आतम निरदले, जिन-

बदन पूरनचन्द्र निरखे सकल मनवांछित फले ॥ १ ॥
मुझ आज आतम भयो पावन आज विघ्न विनाशिया,
संसार सागर नीर निवर्यो अखिल तत्व प्रकाशिया।
अब भई कमला किंकरी मुझ उभय भव निर्मल ठये, दुख
जरो दुर्गति वास निवरयो आज नव मंगल भये ॥ २ ॥
मन हरण मूरति हेर प्रभु की कौन उपमा लाइये, मम
सकल तन के रोम हुलसे हर्ष और न पाइये । कल्याण
काल प्रत्यक्ष प्रभु लखि कौन उपमा लाइये, मम सकल
तन में भये आनंद हर्ष उर न समाइये ॥ ३ ॥
भर नयन निरखै नाथ तुमको और वांछा ना रही, मम
सब मनोरथ भये पूरन रंक मानो निधि लई। अब होउ
भव भव भक्ति तेरी कृपा ऐसी कीजिये, कर जोड़ भूधर-
दास विनवै यही वर मोहि दीजिये ॥ ४ ॥

८०

(विनती पं भागचंदजी कृत)

दोहा—सिद्धारथ प्रियकारणी, नंदन वीर जिनेश।
शिव कर वंदूं अमित गति, कर्ता वृष उपदेश॥१॥

(पञ्चपरमेष्ठी की स्तुति) गीताछंद

मनुज नाग सुरेन्द्र जाके ऊपरि छत्र त्रय धरें, कल्याण
पञ्चकमोद माला पाय भव भ्रम तम हरे । दर्शन अनंत

अनंत ज्ञान अनंत सुख वीरज भरे, जयवंत ते अरहन्त शिवतिय कन्त मो उर संचरे ॥ १ ॥ जिन परम ध्यान कृशाऽनुवान सुतान तुरत जला दये, युतमान जन्म जरा-मरण मय त्रिपुर फेर नहीं भये। अविचल शिवालय धाम पायो स्वगुणतें न चलें कदा, ते सिद्ध प्रभु अविरुद्ध मेरे शुद्ध ज्ञान करो सदा ॥ २ ॥ जे पञ्च विधि आचार निर्मल, पञ्च अग्नि सुसाधते। पुनि द्वादशांग समुद्र अवगाहत सकल भ्रम बाधते, वरसूर सन्त महन्त विधिगण हरण को अति दक्ष है। ते मोक्ष लक्ष्मी देहु हमको जहां नाहि विपक्ष है ॥ ३ ॥ जो घोर भव कानन कुअटवी पाप पञ्चानन जहां, तीक्षण सकल जन दुखकारी जासको नखगण महा, तहां भ्रमत भूले जीवकों शिव मग बतावें जे सदां, तिन उपाध्याय मुनिंद्र के चरणारविन्द नमूं सदां ॥ ४ ॥ विन संग उग्र अभंग तपतें अंगमें अति खीन हैं, नहिं हीन ज्ञानानंद ध्यावत धर्म्म शुक्ल प्रवीन हैं, अति तपो कमला कलित भासुर सिद्ध पद साधन करें, ते साधु जयवन्तो सदां जे जगत के पातिक हरें ॥ ५ ॥

८२

(वीनती सकल)

दोहा—सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन ॥१॥
सो जिनेन्द्र जयवन्त नित, अरिरज रहस विहीन ॥

पद्धरी छंद—जय वीत राग विज्ञान पूर, जय मोह तिमिर को हरन सूर। जय ज्ञान अनंतानंत धार, दृग सुख वीरज मंडित अपार ॥ २ ॥ जय परम शान्त मुद्रा समेत, भविजन को निज अनुभूत हेत। भवि भागन वच जोगे वशाय, तुम धुनि सुनिके विभ्रम नशाय ॥ ३ ॥ तुम गुण चिन्तत निज पर विवेक, प्रगटैं विघटैं आपद अनेक। तुम जग भूषण दूषण वियुक्त, सब महिमा युक्त विकल्प मुक्त ॥ ४ ॥ अविरुद्ध शुद्ध चेतन स्वरूप, परमात्मा परम पावन अनूप। शुभ अशुभ विभाव अभाव कीन, स्वाभाविक परणतिमय अछीन ॥ ५ ॥ अष्टादश दोष विमुक्त धीर, स्वचतुष्टय मय राजत गम्भीर। मुनि गनधरादि सेवत महन्त, नव केवल लब्धि रमा धरन्त ॥ ६ ॥ तुम शासन सेय अमेय जीव, शिव गये जांहि जैहैं सदीव। भवसागर में दुख छारवार, तारन को और न आपटार ॥७॥ यह लखि निज दुख गद हरण काज, तुमही निमित्त कारण इलाज। जाने ताते मैं शरण आय, उचरों निज दुख जो चिर लहाय ॥ ८ ॥ मैं भ्रम्यो अपन पो विसरि आप, अपनाये विधि फल पुन्य पाप। निज को पर को करता पिछान, परमें अनिष्टता इष्ट ठान ॥ ६ ॥ आकुलित भयो अज्ञान धार, ज्यों मृग मृगतृष्णा जानि वार। तन परणति में आपौ चितार, कबहूं न अनुभयो स्वपद

सार ॥ १० ॥ तुमको विन जाने जो कलेश, पाये सो तुम जानत जिनेश । पशु नारक नर सुरगति मंझार, भव धरि धरि मरयो अनंत बार ॥ ११ ॥ अब काल लब्धि बलतें दयाल, तुम दर्शन पाय भयो खुशाल । मन शान्त भयो मिट सकल द्वंद, चाख्यो स्वातम रस दुख निकंद ॥ १२ ॥ तातें अब ऐसी करो नाथ, विछुरैं न कभी तुम चरण साथ । तम गुण गणको नहीं छेवदेव, जग तारन को तुम विरद एव ॥ १३ ॥ आतम के अहित विषय कषाय, इनमें मेरी परणति न जाय । मैं रहों आप में आप लीन, शिव करों होउ ज्यों निजाधीन ॥ १४ ॥ मेरे न चाह कुछ और ईश, रत्नत्रय निधि दीजे मुनीश । मुझ कारज के कारण जु आप, शिव करो हरो मम मोह ताप ॥ १५ ॥ शशि शान्त करण तप हरन हेत, स्वयमेव तथा तुम कुशल देत । पीवत पीयूप ज्यों रोग जाय, त्यों तुम अनुभव तें भव नशाय ॥ १८ ॥ त्रिभुवन तिहुं-काल मझार कोय, नहिं तुम विन निज सुखदाय होय । मो उर निश्चै यह भयो आज, दुख जलधि उतारन तुम जिहाज ॥ १६ ॥

दोहा—तुम गुण गण मणि गणपती, गणत न पावे पार ।
दौल स्वल्प मति किम कहैं, न मूं त्रियोग समार ॥२०

८३

(वीनती)

प्रभु पतित पावन मैं अपावन चरण आयो शरण जी,
यह विरद आप निहार स्वामी मेटो जामन मरन जी।
तुम ना पिछाना आन मान्या देव विविध प्रकार जी,
या बुद्धि सेती निज न जाना भ्रम गिना हितकारजी ॥१॥
भव विकट वनमें कर्म बैरी ज्ञान धन मेरा हरयो,
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय अनिष्ट गति धरतो फिरयो।
धन घड़ी यो धन दिवस योही धन जन्म मेरो भयो,
अब भाग मेरो उदय आयो दरश प्रभुको लखि लियो ॥२॥
छवि वीतरागी नगन मुद्रा दृष्टि नासा पै धरयो,
वसु प्रातिहार्य्य अनंतगुण जुत कोटि रवि छविको हरैं।
मिट गयो तिमिर मिथ्यात मेरो उदय रवि आतम भयो,
मो उर हरष ऐसो भयो मानो रंक चिन्तामणि लयो ॥३॥
मैं हाथ जोड़ नमाय मस्तक वीनऊं तुम चरण जी,
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोक पति जिन सुनो तारन तरन जी।
जाचूं नही सुरवास पुनि नरराज परिजन साथ जी,
बुध जाचहूं तुम भक्ति भव भव दीजिये शिवनाथ जी ॥४॥

८४

(अर्हन्त देव से पुकार)

नाथ सुधि लीजै जी म्हारी, मोहि भव भव दुखिया जान के सुधि लीजो जी म्हारी ॥ टेक ॥ तीन लोक के स्वामी नामी तुम त्रिभुवन दुखहारी । गनधरादि तुम शरन लई, लखि लीनी शरन तुम्हारी ॥ नाथ सुधि लीजो० ॥१॥ जो विधि अरी करी हमरी गति सो तुम जानत सारी, याद किये दुख होत हिये बिच लागत कोट कटारी ॥ नाथ सु० ॥ २ ॥ लब्धि अपर्यापत निगोद में, एकहि स्वांस मंझारी । जनम मरन नव दुगुन विथा की कथा न जात उचारी ॥ नाथ सुधि० ॥ ३ ॥ भूजल ज्वलन पवन प्रत्येक तरु, विकल त्रय दुख भारी । पञ्चेंद्री पशू नारक नर सुर विपति भरी भयकारी ॥ नाथ सुधि० ॥४॥ मोह महारिपु नें न सुखमई हौंन दई सुधि थारी । ते दुठ मंद होत भागन ते पाये तुम जगतारी ॥ नाथ सुधि० ॥५॥ यदपि विराग तदपि तुम शिव मग सहज प्रगट करतारी, ज्यों रवि किरन सहज मग दर्शक, यह निमित अनिवारी ॥ नाथ सुधि० ॥ ६ ॥ नाग छाग गज बाघ भील दुठ तारे अधम उधारी, शीश निवाय पुकारत अबके दौल अधम की बारी ॥ नाथ सुधि० ॥ ७ ॥

८५

(२४ भगवान स्तुति)

करो मिल वंदे वीरम् गान ॥टेक॥ आदि अजित संभव अभिनंदन, सुमति नाथ भगवान। पद्म सुपार्श्वचंदा प्रभु स्वामी, चमकत चन्द समान ॥करो मिल० ॥ १ ॥ पुष्पदन्त शीतल जग नायक, तारक सकल जहान। श्री श्रेयांस प्रभु श्रेय करें नित, देंय हमें बुध ज्ञान ॥ करो मिल वंदे०॥ २ ॥ वास पूज्य प्रभु विमल अनंतः, धर्म्म शान्त की खान। कुंथ कंथ हो शिव रमणी के, पाया शुभ निर्वाण ॥ करो मिल० ॥ ३ ॥ अरह मार्हन्न स्वामी मुनि सुव्रत, व्रत तप जपकी खान, नमि नेम प्रभु पार्श्वनाथ जी, महावीर गुणवान ॥ करो मिल० ॥ ४ ॥ ये चौबीसों वीर जिनेश्वर, इनका नित प्रति गान। सुख दायक शुभ शान्त प्रदायक, मेटत दुख अज्ञान ॥ करो मिल वंदे वीरम गान ॥ ५ ॥

॥ इति भजन रत्नाकर समाप्त ॥